# बर्फ़ की रानी



हान्स क्रिश्चियन एण्डरसन का उपन्यास 'एण्डरसन्स फ़ेअरी टेल्स'

# बर्फ़ की रानी



हान्स क्रिश्चियन एण्डरसन की प्रसिद्ध कथाकृति
'एण्डरसन्स फेयरी टेल्स' का सरल-संक्षिप्त रूपान्तर
रूपान्तरकार : श्रीकान्त व्यास

# बर्फ़ की रानी



**₹ 40**

ISBN : 978-81-7483-018-0

संस्करण : 2013



BURF KI RANI

(Abridged Hindi version of 'Anderson's Fairy Tales')

मुद्रक : के.एच.बी. ऑफसेट प्रोसेस, दिल्ली

**शिक्षा भारती**

मदरसा रोड, कश्मीरी गेट-दिल्ली-110006



# बर्फ की रानी

एक जादूगर था। वह बहुत दुष्ट था। बिल्कुल राक्षस ही समझो। दूसरों को तंग करने में उसे बड़ा मज़ा आता था। उसने एक ऐसा जादुई आईना तैयार किया, जिसमें हर अच्छी और सुन्दर चीज़ भद्दी और बदसूरत दिखाई देती थी। आमतौर से तो उसमें अच्छी चीजें दिखाई ही नहीं देती थीं। खराब और बदसूरत चीज़ें उसमें खूब अच्छी और खूबसूरत मालूम पड़ती थीं।

इस जादुई आईने में अगर कोई सुन्दर आदमी देखता तो उसकी शक्ल बिलकुल बिगड़ जाती थी। कभी सिर गायब है, तो कभी पेट गायब। हाथ-पैर इस तरह मुड़े हुए और टूटे हुए-से लगते थे कि कोई उसे पहचान नहीं सकता था। जादूगर यह देखकर दुष्टतापूर्वक हंसता था और मन ही मन बड़ा खुश होता था।

जादूगर ने अपने बहुत-से चेले पाल रखे थे। वे भी एक से एक बढ़कर दुष्ट थे। वे उस जादुई आईने को लेकर घूमते थे और लोगों को उनकी बदली हुई शक्लें दिखाकर चिढ़ाया करते थे।

एक बार उसके शिष्यों को एक नई चाल सूझी। उन्होंने सोचा कि देवतागण और स्वर्ग की अप्सराएं वगैरह अपने को बहुत सुन्दर मानती हैं। चलो, उन्हें भी उनकी असली शक्ल इस आईने में दिखाई जाए। यह सोचकर वे जादू के बल से आईना उठाकर आसमान में उड़ने लगे। वे उड़ते चले गए। यहां तक कि इतनी ऊंचाई पर जा पहुंचे कि उनके हाथ से वह जादुई आईना छूट गया और ज़मीन पर जा गिरा। गिरते ही उसके इतने छोटे-छोटे टुकड़े हो गए कि वे हवा में उड़ने लगे। संसार के लिए यह और भी बुरी बात हुई। उस शैतान आईने के ज़र्रे कुछ लोगों की आंखों में पड़े और वे हर अच्छी चीज को बुरी समझने लगे। उस शैतान आईने के टुकड़े कुछ लोगों के दिल में भी जा बैठे। यह और भी बुरा हुआ। लोगों के दिलों से दया, ममता, प्रेम, स्नेह—सब कुछ उड़ गया और वे पत्थर दिल हो गए, बिलकुल बर्फ जैसे ठंडे और कड़े। उस शीशे के कुछ बड़े टुकड़े इकट्ठे करके लोगों ने इनके चश्मे बना लिए और उन्हें अपनी आंखों पर लगाकर वे अपने पड़ोसियों और मिलने-जुलने वालों, सबको बुरा समझने लगे।

जादूगर यह सब देखकर खूब प्रसंन्न हुआ और खिल-खिलाकर हंसता रहा। अब भी उस शैतान आईने के टुकड़े हवा में तैर रहे हैं। इनका क्या असर होता है। इसे हम आगे कहानी में पढ़ेंगे।

एक बड़ा शहर था, जहां बहुत-से लोग रहते थे। वह इतना घना बसा हुआ था और लोगों के पास इतने छोटे-छोटे मकान थे कि वे एक बगीचा तक नहीं लगा

सकते थे। ऐसी ही घनी बस्ती में दो छोटे बच्चे रहते थे। एक लड़का और एक लड़की। दोनों भाई-बहिन नहीं थे, लेकिन दोनों में भाई-बहिन जैसा ही प्यार था। उनके घर इतने पास-पास थे कि वे अपने घर की खिड़की पार करके दूसरे की खिड़की में जा सकते थे। खिड़की के पास लकड़ी के बड़े-बड़े डिब्बों में उनके घर के लोगों ने कुछ पौधे लगा रखे थे, जिनमें गुलाब भी थे।

जाड़े के दिनों में दोनों का मिलना-जुलना बन्द हो जाता था, क्योंकि इतनी बर्फ गिरती थी कि खिड़कियों के शीशों पर भी बर्फ़ की मोटी तह जम जाती थी। वे एक-दूसरे को देख भी नहीं पाते थे। ऐसे मौके पर वे किसी सिक्के को अंगीठी पर ख़ूब गर्म करते थे और फिर उसे खिड़की के शीशे पर चिपका देते थे। इससे गर्मी पाकर उतनी जगह की बर्फ़ गल जाती थी और एक छेद-सा बन जाता था। उसी छेद से दोनों एक-दूसरे को देखते थे। लड़के का नाम था किटी और लड़की का नाम था गेर्डा।

कभी-कभी लड़के की दादी दोनों को कहानियां, खासकर बर्फ़ की रानी की कहानियां सुनाती थी।

एक दिन शाम को बाहर बर्फ़ गिर रही थी। लड़का अपने कमरे में ही था। उसने एक छेद में से झांककर बाहर देखा। बाहर पौधों के डिब्बों में बर्फ़ गिर रही थी। अचानक बर्फ़ के एक गोले पर उसकी नज़र जम गई। उसने देखा कि बर्फ़ का वह गोला बढ़ते-बढ़ते रुई के एक ढेर की तरह हो गया। यही नहीं, थोड़ी देर में लगा कि वहां सफेद वस्त्र पहने एक रानी बैठी है, जिसने तारों का मुकुट पहन

रखा है। लड़का उसे देखता ही रह गया। क्या यही बर्फ़ की रानी है? अचानक रानी ने उसको अपनी ओर आने का इशारा किया। लड़का डर गया और खिड़की से नीचे उतर आया। अचानक उसने देखा कि एक बड़ी-सी सफेद चिड़िया उसकी खिड़की के पास से उड़ गई और बर्फ़ की रानी गायब हो गई।

इसके कई दिन बाद की बात है। लड़का गेर्डा के पास बैठा था। वे दोनों एक किताब के पन्ने उलट रहे थे, जिसमें चिड़ियों और जंगली जानवरों के चित्र थे। तभी जैसे ही गिरजे के घंटे ने बारह बजाए, लड़का कहने लगा, "लगता है मेरी आंखों में कुछ गिर गया है और मेरे सीने में दर्द हो रहा है।" गेर्डा ने उसकी आंखें देखीं, लेकिन उसे कुछ नहीं दिखाई दिया। असल में उसकी आंखों में उसी शैतान आईने का कोई बारीक टुकड़ा आ गिरा था। थोड़ी ही देर में वह गेर्डा से झगड़ने लगा और बोला, "तुम इस तरह रोती क्यों हो? और तुम्हारा चेहरा कितना भद्दा मालूम पड़ता है—छिः !" असल में गेर्डा हंस रही थी, लेकिन लड़के को उलटा ही दिखाई देता था।

वह फिर बोला, "ये गुलाब के पौधे कितने भद्दे हैं? और यह डिब्बा भी सड़ गया है।" उसने डिब्बे को ठोकर मार दी और फूल नोच डाले। लड़की चिल्लाई, "अरे, तुम यह क्या कर रहे हो!" लेकिन वह नहीं माना और उसे धक्का देकर भाग गया। उस शैतान आईने के टुकड़े से अब वह बहुत शरारती और झगड़ालू हो गया था।

वह दादी को मुंह चिढ़ाता, किताबें फाड़ डालता था

और पड़ोसियों को तंग करता था। वह गेर्डा को भी बहुत-बहुत रुलाया करता था, क्योंकि उसके दिल में भी शैतानी आईने के टुकड़े चले गए थे।

जाड़े के दिनों में एक दिन वह गरम कपड़े पहनकर और हाथों में दस्ताने पहनकर मुहल्ले के शरारती लड़कों के साथ खेलने निकल गया। वे लोग बर्फ़ पर फिसलने का खेल खेल रहे थे। उधर से जब लोगों की गाड़ियां गुजरती थीं, तो लड़के अपनी फिसलने वाली स्लेजों को उनके पीछे बांध देते थे और दूर तक फिसलते चले जाते थे।

किटी ने भी एक गाड़ी के पीछे अपनी स्लेज बांध दी और फिसलना शुरू किया। उस गाड़ी में एक आदमी सफेद लबादा ओढ़े और मोटी सफेद टोपी लगाए बैठा था। वह आदमी बार-बार मुड़कर किटी को अपने पीछे आने का इशारा करता था और किटी उसके पीछे-पीछे फिसलता चला जा रहा था। गाड़ी शहर की सड़कों को पार करती हुई थोड़ी देर में शहर के बाहर आ गई। किटी कुछ घबराया। उसने अपनी स्लेज को गाड़ी से छुड़ाने की कोशिश की। लेकिन उसकी कोशिश बेकार गई। किटी ने चिल्लाने की कोशिंश की, लेकिन उसके मुंह से आवाज़ ही नहीं निकली और अगर निकलती भी तो वहां सुनता कौन!

बर्फ़ तेज़ी से गिर रही थी। इतने में किटी ने देखा कि गाड़ीवान की टोपी और लबादा ग़ायब हो गया और गाड़ीवान की जगह सफेद वस्त्र पहने एक सुंदर देवी आ बैठी। किटी ने फौरन पहचान लिया, यह बर्फ़ की रानी थी!

बर्फ की रानी ने किटी को अपनी गाड़ी में बिठा लिया

और उसे अपनी सफ़ेद चद्दर से ढककर बोली, "तुम्हें बहुत जाड़ा लग रहा है न !" लेकिन उसकी चद्दर में तो और भी ठंडक थी। बर्फ़ की रानी ने जब प्यार से उसका माथा चूमा तो उसे लगा जैसे उसका माथा बर्फ़ को छू गया हो।

वह आसमान में उड़ने लगी। किटी ने सुना, बादल रानी के स्वागत में कोई गीत गा रहे थे। अब वे लोग बादलों के भी ऊपर उड़े जा रहे थे। बर्फ़ की रानी उसे बादलों के देश में ले आई थी।

उधर गेर्डा उसकी याद में बड़ी दुःखी थी। लड़कों से उसे मालूम हुआ कि किसी गाड़ी के साथ किटी अपनी स्लेज में घिसटता न मालूम कहां चला गया। लड़कों की आंखों में आंसू आ गए और गेर्डा तो फूट-फूटकर रोने लगी। कुछ दिनों बाद जाड़ा खत्म हो गया। वसन्त ऋतु आई। जब वसन्त ऋतु की सुहावनी धूप गेर्डा की खिड़की में आई, तो उसे अपने साथी की बड़ी याद आई। एक दिन वह अपने लाल जूते पहनकर नदी किनारे जा पहुंची और नदी से पूछने लगी, "क्या तुम मेरे भाई को बहा ले गई हो? मैं तुम्हें अपने ये नये-नये जूते दूंगी, तुम मेरा भाई ला दो !"

इसके जवाब में नदी की लहरें अजीब तरह से हिलने लगीं। गेर्डा ने अपने जूते पानी में फेंक दिए। लेकिन लहरें जूतों को बहाकर फिर से किनारे छोड़ गईं। गेर्डा को लगा कि शायद उसने जूते ज्यादा दूर नहीं फेंके, इसलिए ये वापस लौट आए हैं। उसने देखा कि पास ही सरपत की झाड़ी के पास एक नाव खड़ी थी। वह नाव पर चढ़ गई

और वहां से उसने ज़ोर लगाकर जूते पानी में फेंक दिए। लेकिन ऐसा करते समय नाव को एक झटका लगा और उसकी रस्सी खुल गई और नाव नदी में बहने लगी। गेर्डा बड़ी घबराई। लेकिन नाव को रोकने का कोई चारा ही नहीं था। वह बड़ी तेज़ी से बही जा रही थी। गेर्डा डरकर चिल्लाने लगी। लेकिन किसी ने उसकी आवाज़ ही नहीं सुनी। नाव बहती रही। गेर्डा ने सोचा कि शायद यह नाव उसे किटी के पास ले जाएगी। नाव बहती-बहती ऐसी जगह जा पहुंची, जहां नदी-किनारे एक छोटी-सी झोंपड़ी बनी थी, जिसकी एक खिड़की नीली थी और दूसरी लाल। झोंपड़ी के दरवाज़े पर लकड़ी के दो सिपाही खड़े थे। जैसे ही गेर्डा की नाव झोंपड़ी के पास पहुंची, सिपाहियों ने उसे सलाम किया। गेर्डा ने सोचा कि शायद ये ज़िन्दा हैं। वह मदद के लिए उन्हें पुकारने लगी। लेकिन सिपाही चुपचाप खड़े रहे। उसकी आवाज सुनकर झोंपड़ी में से एक बुढ़िया निकली। वह एक लाठी के सहारे चल रही थी। उसने अपनी लाठी से नाव को किनारे की ओर खींचते हुए कहा, "हाय, बेचारी लड़की ! तुम क़ितनी दूर पानी में बह आई !" फिर उसने गेर्डा को उठाकर किनारे उतार लिया। गेर्डा किनारे पर पहुंचकर बहुत खुश हुई। लेकिन साथ ही इस विचित्र बुढ़िया को देखकर उसे डर लग रहा था।

बुढ़िया के पूछने पर गेर्डा ने सारा किस्सा कह सुनाया और फिर पूछा, "क्या तुमने मेरे भाई किटी को देखा है ?"

बुढ़िया बोली, "नहीं, मैंने उसे नहीं देखा। लेकिन अगर वह नदी में बह रहा है, तो जरूर यहां आ पहुंचेगा।

तुम घबराओ मत। तब तक तुम यहीं रहो और आराम से यहां के फूल सूंघो और फल खाओ। यहां आसपास बड़ा अच्छा बगीचा है, जिसमें ऐसे फूल लगते हैं जैसे तुमने कभी नहीं देखे होंगे।"

फिर बुढ़िया उसका हाथ पकड़कर उसे अपनी झोंपड़ी में ले गई। अन्दर जाकर उसने दरवाजा बन्द कर लिया। असल में यह बुढ़िया एक जादूगरनी थी। लेकिन यह दुष्ट नहीं थी। गेर्डा के बाल संवारते-संवारते वह उस पर जादू कर रही थी। वह उसे अपने पास ही रखना चाहती थी। धीरे-धीरे गेर्डा किटी को भूलने लगी।

फिर बुढ़िया उसे अपना बगीचा दिखाने ले गई। उस बाग में तरह-तरह के फूल खिले हुए थे। वह दिन-भर उनके बीच खेलती रही। शाम को जब वह थक गई, तब उसके सोने के लिए एक छोटा-सा और खूब मुलायम बिस्तर लगाया गया। गेर्डा जैसे ही उस पर लेटी कि उसे गहरी नींद आ गई और वह मीठे सपने देखने लगी।

इसी तरह धीरे-धीरे उसके दिन बीतने लगे। वह उस बाग के हर फूल को जानती थी। लेकिन उसे लगता था कि कोई एक फूल इसमें से गायब है। वह कौन-सां फूल है, यह उसे याद नहीं आता था। एक दिन उस बुढ़िया के हैट पर उसकी नजर गई और उसे फौरन याद आया कि इस बाग में गुलाब के फूल नहीं हैं। इसीलिए यह इतना सूना-सूना-सा लगता है। असल में बात यही थी कि उस बुढ़िया ने जादू के ज़ोर-से बाग के सारे गुलाब के पौधों को गायब कर दिया था। उसे डर था कि अगर गेर्डा गुलाब

देखेगी, तो उसे किटी की याद आ जाएगी। लेकिन वह अपने हैट पर बने हुए गुलाब के चित्र को मिटाना भूल गई थी।

"यह क्या, इस बाग में गुलाब का एक भी फूल नहीं है?" गेर्डा बोली। उसे अपने गुलाब इतने याद आए कि वह वहीं बगीचे में बैठकर रोने लगी। उसके आंसू टपक रहे थे, वहां पहले गुलाब का एक सुन्दर-सा पौधा लगा था, जिसे बुढ़िया ने अपने जादू के ज़ोर से गायब कर दिया था। गेर्डा के गरम-गरम आंसू जब उस जगह टपके तो वहां फिर से गुलाब का पौधा निकल आया। उस पर बहुत ही सुंदर फूल खिले हुए थे। गेर्डा ने गुलाब के फूल को चूम लिया। उसे पिछली सारी बातें याद हो आईं। उसने गुलाब के फूल से पूछा, "क्यों, क्या किटी मर गया?"

गुलाब के फूल बोले, "नहीं, अभी वह मरा नहीं है। हम तो अब तक ज़मीन में ही थे, जहां मरे हुए लोग रहते हैं। वहां हमें किटी नहीं मिला?"

लेकिन जब गेर्डा ने उनसे किटी का पता पूछा, तो उनमें से क़ोई उसका पता नहीं बता सका।

गेर्डा उस बाग में बेचैन होकर इधर-उधर भटकने लगी। इतने में एक कौवा कांव-कांव करता हुआ आया और गेर्डा के सामने आ बैठा। गेर्डा ने उससे किटी के बारे में पूछा, तो वह बड़ी देर तक चुप रहा और गर्दन हिलाता रहा। फिर अचानक बोला, "ओह, हां, याद आया। शायद वह किटी ही था लेकिन अब वह राजकुमारी के पास रहता है। वह ज़रूर तुम्हें भूल गया होगा। इस देश में एक

राजकुमारी रहती है। वह बड़ी चालाक है। वह दुनिया-भर के अखबार पढ़ती है, और सारी खबरें उसे मालूम रहती हैं। एक दिन उसने सोचा कि अब मुझे शादी करनी चाहिए। वह अपने लिए ऐसा लड़का खोजने लगी, जो बहुत बुद्धिमान हो और जिसे अच्छी तरह बात करना आता हो।"

"ठीक है, लेकिन क्या मेरा किटी तुम्हें वहां दिखाई दिया?"

कौवा बोला, "ठहरो, ठहरो, बता रहा हूं। हां तो, वहां एक दिन एक लड़का आया। वह देखने में बड़ा सुन्दर था, बिलकुल तुम्हारी ही तरह। वह सीधा अन्दर घुस गया। हालांकि वह फटे और गन्दे कपड़े पहने था। लेकिन कोई उसे रोक नहीं सका। वह सीधा राजकुमारी के पास जा पहुंचा। उसने राजकुमारी से कहा, "मैं तुम्हारा मन जीतने नहीं आया हूं, बल्कि तुम्हारी बुद्धिमानी की बातें सुनने आया हूं।"

"हां, हां, वह मेरा किटी ही होगा। वह बड़ा बहादुर है। क्या तुम मुझे राजकुमारी के महल में ले जा सकते हो!"

कौवा बोला, "यह इतना आसान काम नहीं है। पहले मैं अपनी कौवी से इसके बारे में बात कर लूं, क्योंकि तुम्हारी जैसी छोटी बच्ची को महल में ले जाने की इजाज़त पाना बड़ा मुश्किल है। अच्छा, तुम यहीं बैठो। मैं ज़रा अपनी कौवी से बात कर आऊं।" यह कहकर कौवा उड़ गया।

थोड़ी देर बाद फिर कांव-कांव करता हुआ वह लौट आया और बोला, "मेरी कौवी ने तुमको सलाम भेजा है,

और लो, यह रोटी का टुकड़ा भी दिया है। इसे खा लो, तुम्हें भूख लगी होगी। तुम रोओ मत। मेरी कौवी तुम्हें पिछवाड़े के दरवाजे से महल में पहुंचा देगी। आओ, चलो मेरे साथ।"

रोटी खाकर गेर्डा कौवे के साथ चल पड़ी। वह जल्दी-जल्दी चल रही थी, क्योंकि उसे डर था कि कहीं वह बुढ़िया पीछे-पीछे न आती हो। थोड़ी देर में वह कौवा उसे एक बहुत बड़े बगीचे में ले गया। वह राजकुमारी के महल का बगीचा था। रास्ते में कौवी भी साथ हो ली। वह रास्ता बताते हुए उसे महल में ले गई।

गेर्डा मन में घबरा रही थी। एक ज़ीना पार करके वे लोग ऊपर पहुंचे। वहां एक दीया जल रहा था। कौवी के कहने पर गेर्डा ने दीया उठा लिया और आगे-आगे चलने लगी। थोड़ी देर में वे सोने वाले कमरे में पहुंच गए। वह कमरा बड़ा सुन्दर था। देखने में उसकी छत और बीच में लगा हुआ खम्भा ताड़ के पेड़ की तरह लगता था, जिसमें तरह-तरह के हीरे-मोती लगे हुए थे। कमरे में लिली के फूल की शक्ल के दो पलंग लगे थे। एक राजकुमारी के लिए था और दूसरा राजकुमार के लिए। गेर्डा पलंग पर किटी को ढूंढने लगी। उस पर एक लड़का सो रहा था। उसने उसे आवाज़ दी और दीये से उसके चेहरे पर प्रकाश किया। राजकुमार की नींद खुली नहीं थी। गेर्डा को यह देखकर बड़ा अफसोस हुआ कि वह किटी नहीं था।

तब तक राजकुमार की नींद भी खुल गई। उसने पूछा, "तुम कौन हो, और यहां क्या करने आई हो?" गेर्डा ने

रोते-रोते अपना सारा किस्सा कह सुनाया। उसने यह भी बताया कि किस तरह इस महल के पालतू कौवे और कौवी ने उसकी मदद की। राजकुमार और राजकुमारी को उसकी कहानी सुनकर बड़ा दुःख हुआ। लेकिन कौवों के इस जोड़े पर वे दोनों बहुत प्रसन्न थे। राजकुमार ने अपने पालतू कौवों की बड़ी तारीफ़ की, क्योंकि उन्होंने एक ग़रीब लड़की की मदद की थी। राजकुमारी ने उससे पूछा, "अच्छा बताओ, तुम लोग महल से आज़ाद होना चाहते हो या अपने इस काम के बदले में तुम्हें दरबारी कौवा बना दिया जाए, महल के रसोईघर में जो कुछ बच जाएगा वह तुम्हारा होगा।"

कौवे और कौवी ने सिर झुकाकर उन्हें सलाम किया और दरबारी कौवा बनना स्वीकार कर लिया। राजकुमारी के हुक्म से गेर्डा को खाना खिलाया गया और फिर आराम से सुला दिया गया। दूसरे दिन गेर्डा को खूब अच्छे-अच्छे कपड़े पहनने को मिले और उससे कहा गया कि तुम महल में ही कुछ दिन मेहमान बनकर रहो। लेकिन गेर्डा राजी नहीं हुई। उसने सिर्फ एक जोड़े जूते और एक छोटी घोड़ा-गाड़ी मांग ली, तांकि उसमें बैठकर वह किटी को खोजने जा सके।

फौरन उसके लिए एक नई गाड़ी का इन्तज़ाम किया गया। असली सोने की बनी हुई गाड़ी थी यह। उसमें एक कोचवान और चार नौकर भी थे। राजकुमारी ने खुद सहारा देकर गेर्डा को गाड़ी में बिठाया और सम्मानसहित विदा किया।

गाड़ी एक घने और अंधेरे जंगल में से होकर आगे बढ़ने लगी। अंधेरे में वह काफी चमक रही थी। उस जंगल में कुछ डाकू रहते थे। जब उनकी नज़र गाड़ी पर पड़ी, तब वे अपने को नहीं रोक सके! उन्होंने आपस में तय किया कि इसे लूटना चाहिए। गाड़ी सोने की मालूम होती है।

डाकुओं ने आगे बढ़कर अचानक गेर्डा की गाड़ी को घेर लिया। उन्होंने कोचवान और नौकरों को मार डाला और गेर्डा को गाड़ी के बाहर खींच लिया। तब तक एक बूढ़ी लुटेरिन भी वहां आ पहुंची। उसका आदमी लुटेरों का सरदार था। गेर्डा को देखकर वह बोली, "वाह, कैसी मोटी ताजी लड़की है! इसे मुझे पकड़ा दो। यह खाने में बड़ी जायकेदार लगेगी।" वह बुढ़िया बड़ी डरावनी थी। देखते-देखते उसने एक चमचमाती छुरी निकाल ली। वह उसे मारने ही जा रही थी कि इतने में उसकी लड़की आ पहुंची और उससे लिपट गई। वह अपनी मां से कहने लगी, "मां, इसे मुझे दे दो। मैं इसके साथ खेलूंगी। यह मेरे साथ रहेगी।" यह कहकर उस लड़की ने बात-बात में अपनी मां के कान काट लिए। असल में वह अपनी मां की बड़ी दुलारी बेटी थी और किसी को कुछ नहीं समझती थी।

लुटेरे की लड़की गेर्डा के साथ उसकी गाड़ी में आ बैठी और गाड़ी को हांकते हुए और भी घने जंगल में ले गई। वह गेर्डा के बराबर ऊंची थी। लेकिन उससे ज्यादा तगड़ी थी। उसने प्यार से गेर्डा के कंधे पर हाथ रखकर

कहा, "डरो मत, जब तक मैं तुम्हें चाहती हूं, मेरी मां तुम्हें नहीं मारेगी। क्या तुम राजकुमारी हो?"

"नहीं!" गेर्डा बोली और फिर उसने अपना सारा किस्सा उसे भी बता दिया। वह लड़की उसकी बातें सुनती रही और गेर्डा के आंसू पोंछती रही। लुटेरों के महल में जाकर गाड़ी रुक गई। महल के लगभग सभी कमरों की छतें धुएं से काली हो रही थीं। एक कमरे में एक बड़ी भारी देगची में कोई चीज़ पक रही थी। आग पर खरगोश और हिरन भूने जा रहे थे। दोनों ने डटकर भर-पेट खाना खाया, फिर दोनों एक कमरे में आराम से लेट गईं। उस कमरे में छत में लगे हुए बांसों पर बहुत-से कबूतर ऊंघ रहे थे। उस लड़की ने बताया कि ये सब उसके पालतू कबूतर हैं। उसने एक बड़ा भारी हिरन भी पाल रखा था, जो हमेशा एक बड़ी ज़ंजीर से बंधा रहता था। थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद वह लड़की सो गई। लेकिन गेर्डा को नींद नहीं आ रही थी।

इतने में दो जंगली कबूतर बोले, "गुटर गूं, गुटर गूं! हमने तुम्हारे किटी को देखा है, वह बर्फ़ की रानी के रथ के साथ अपनी स्लेज बांधकर भागा चला जा रहा था।"

"यह क्या कह रहे हो तुम लोग? जरा मुझे भी बताओ कि बर्फ़ की रानी कहां रहती है? क्या तुम लोग कुछ जानते हो?" गेर्डा ने कबूतरों से पूछा।

"हमें यह तो नहीं पता कि वह कहां रहती है। हो सकता है, बर्फ़ के देश में रहती हो। यह रेण्डियर (बर्फीले प्रदेश का हिरन) तुम्हें उसके बारे में बहुत कुछ बताएगा।"



इतने में रेण्डियर अपने पिंजरे से बोला, "वहां चारों तरफ हमेशा बर्फ़ ही बर्फ़ रहती है। वहां सब आज़ादी से रहते हैं। बर्फ़ की रानी गर्मी के दिनों में बर्फ़ के मैदान में आ जाती है। लेकिन उसका किला उत्तरी ध्रुव पर है।"

सुबह उठकर गेर्डा ने उस लड़की को कबूतर और रेण्डियर की बातें बता दीं और उससे मदद मांगी। लुटेरे की लड़की राज़ी हो गई। दोपहर में जब सब लोग खा-पीकर सो गए, तब उस लड़की ने गेर्डा को रेण्डियर से अपने साथ उत्तर के बर्फ़ीले देश 'लैपलैण्ड' पहुंचा आने को कहा।

रेण्डियर फौरन राज़ी हो गया। लुटेरे की लड़की ने गेर्डा को रेण्डियर की पीठ पर बांध दिया और अपनी मां के बड़े-बड़े दस्ताने हाथों में पहना दिए, ताकि बर्फीले देश में उसे ज्यादा ठंड न लगे। गेर्डा की आंखों में आंसू आ गए, क्योंकि उसने यह कभी नहीं सोचा था कि लुटेरों के बीच भी उसे अपना कोई मित्र मिल जाएगा।

उसे आंसू बहाते देखकर लुटेरे की लड़की बोली, "तुम इस तरह रोती क्यों हो? तुम्हें तो और खुश होना चाहिए। लो, ये रोटी के कुछ टुकड़े हैं और कुछ भुना हुआ गोश्त है। अपने पास रख लो, रास्ते में भूख लगने पर खा लेना।"

फिर उसने रेण्डियर की पीठ ठोककर कहा, "देखो, इस लड़की को कहीं गिराना मत, बहुत संभालकर ले जाना!"

रेण्डियर गेर्डा को अपनी पीठ पर बिठाए हुए फौरन चौकड़ी भरकर भाग खड़ा हुआ। रास्ते में एक जगह रुककर दोनों ने खाना खाया। रेण्डियर फिर से दौड़ने लगा। अन्त में वे दोनों उत्तरी ध्रुव के पास के बर्फ़ीले देश लैपलैण्ड में जा पहुंचे। रेण्डियर एक छोटी-सी झोंपड़ी के पास रुका। यह झोंपड़ी बर्फ का एक अजीब-सा मकान था, जिसके अन्दर एक स्त्री बैठी हुई आंग में मछली भून रही थी। अन्दर जाकर रेण्डियर ने पहले तो गेर्डा का किस्सा कह सुनाया और फिर अपनी रामकहानी सुनाई। गेर्डा को इतना जाड़ा लग रहा था कि वह एक कोने में दुबककर बैठ गई।

गेर्डा का किस्सा सुनकर वह स्त्री बोली, "बेटी, अभी तुम्हें बहुत दूर जाना है। यहां से सौ मील दूर फिनलैंड

नामक एक देश पड़ता है। आजकल बर्फ़ की रानी ने वहीं पर डेरा डाल रखा है। उसके खेमे में रोज़ रात को नीले रंग की बत्तियां जलती हैं। लो, एक मछली के सूखे हुए टुकड़े पर मैं तुम्हें एक चिट्ठी लिख देती हूं क्योंकि मेरे पास कोई काग़ज़ नहीं है। यह चिट्ठी तुम रास्ते में रहने वाली फिनलैंड की एक स्त्री को दे देना। वह तुम्हें आगे का रास्ता बता देगी।" उसने गेर्डा को खाना खिलाया। गेर्डा ने कुछ देर तक आग तापी और फिर वह उसकी चिट्ठी लेकर रेण्डियर की पीठ पर सवार हो गई। रेण्डियर दौड़ने लगा।

रेण्डियर रात-भर दौड़ता रहा और फिनलैंड जा पहुंचा। वह उस स्त्री की झोंपड़ी जानता था, जिसके नाम गेर्डा एक चिट्ठी लेकर जा रही थी। उसने वहां जाकर आवाज़ लगाई और फिर घुटनों के बल रेंगते हुए दोनों उसकी झोंपड़ी में घुस गए। अन्दर आग जल रही थी। गेर्डा आग तापने बैठ गई। उस स्त्री ने सूखी मछली पर लिखी हुई चिट्ठी दो-तीन बार पढ़ी और फिर मछली को खाने के लिए संभालकर रख लिया। फिर उसने रेण्डियर से कहा, "इस लड़की का भाई किटी अभी तक बर्फ़ की रानी के साथ ही रहता है। उसे यहां की चीज़ें इतनी अच्छी लगती हैं कि वह और सब कुछ भूल गया है। अब वह यहां से जाना नहीं चाहता। लेकिन असली बात तो यह है कि उस जादुई आईने के कुछ टुकड़े उसकी आंखों और उसके दिल में घुसे हुए हैं, जिससे वह हर खराब चीज़ को अच्छी समझने लगा है और बर्फ़ की रानी के असर में रहता है। जब तक वे टुकड़े नहीं निकलते, तब तक वह एक अच्छे

लड़के की तरह नहीं सोच सकता और बर्फ़ की रानी उसे बराबर अपने असर में रखेगी।"

यह सुनकर रेण्डियर बोला, "तो तुम इस नन्हीं बच्ची पर दया करके इसे कोई चीज़ क्यों नहीं दे देतीं, जिसे यह इस मुसीबत में काम ला सके और बर्फ़ की रानी के असर से किटी को छुड़ा सके।"

वह स्त्री कहने लगी, "नहीं, इस लड़की के पास खुद एक बहुत बड़ी शक्ति है। इसी शक्ति के बल पर यह बर्फ़ की रानी के महल में पहुंच सकती है और किटी की आंखों और उसके दिल को जादुई आईने के असर से बचा सकती है। इसके पास जो शक्ति है वह है, इसका पवित्र और प्रेम-भरा हृदय। उसी के बल पर इसे जीत मिल सकती है। यहां से दो मील पर बर्फ़ की रानी का बगीचा है। तुम वहीं एक झाड़ी के पास इसे छोड़कर फौरन लौट आना।" यह कहकर उसने गेर्डा को रेण्डियर की पीठ पर बिठा दिया और रेण्डियर तेज़ी से दौड़ने लगा।

थोड़ी देर में वह बर्फ़ की रानी के बगीचे के पास आ पहुंचा। वहां उसने गेर्डा को उतार दिया और उसे चूम लिया। उसकी आंखों में आंसू आ गए। गेर्डा की आंखें भी भीग आईं। इतने अच्छे रेण्डियर से अलग होते हुए उसे बड़ा दुःख हो रहा था। फिर रेण्डियर वहां से फौरन लौट आया।

अब गेर्डा उस सुनसान बर्फीली जगह में अकेली रह गई। गेर्डा नंगे पैर ही बर्फ़ पर दौड़ने लगी। उसने देखा कि बर्फ़ के कुछ टुकड़े उसका पीछा कर रहे थे। धीरे-धीरे

उनका आकार बदल गया। असल में वे बर्फ़ की रानी के सिपाही थे और वे देखने में बड़े अजीब-से लगते थे। गेर्डा ने डरकर अपनी प्रार्थना दोहरानी शुरू की। थोड़ी ही देर में वहां बहुत-से फ़रिश्ते आ पहुंचे। उन्होंने बर्फ़ के सिपाहियों को मार भगाया। यही नहीं, उन्होंने गेर्डा के पैरों और हाथों को भी छू लिया, जिससे अब उसे जाड़ा बिलकुल नहीं लग सकता था। अब वह शान के साथ बर्फ़ की रानी के महल में घुस गई।

उस महल की दीवारें बर्फ़ की बनी हुई थीं। खिड़कियों के शीशे भी पतले बर्फ़ के बने हुए थे। उस महल में सैकड़ों कमरे थे। वे सब उत्तरी प्रकाश से जगमग थे। सबसे बड़े कमरे के बीच में एक बहुत बड़ी झील थी, जिसका पानी अक्सर जमा रहता था। बर्फ़ की रानी जब यहां रहती थी, तो उसी झील के बीच बैठा करती थी।

वहां नन्हा किटी मारे ठंड के नीला पड़ गया था। फिर भी उसे जाड़ा नहीं लगता था, क्योंकि बर्फ़ की रानी ने उसका शरीर छूकर उसे जाड़ा सहने लायक बना दिया था।

बर्फ़ की रानी कुछ दिनों तक यहां रहती थी और कुछ दिन गर्म देशों की यात्रा के लिए जाती थी। वह जहां जाती थी, वहां जाड़ा आ जाता था। लोग ठंड से ठिठुरने लगते थे और पहाड़ों की चोटियों पर बर्फ जम जाती थी। बर्फ़ की रानी आजकल वहां नहीं थी।

गेर्डा ने जब महल में घुसने की कोशिश की, तो दरवाज़े पर तैनात बहुत ठंडी हवाओं ने उसका रास्ता रोकने की कोशिश की, लेकिन गेर्डा ने जैसे ही अपनी प्रार्थना याद

करनी शुरू की कि उसका रास्ता आसान हो गया। अंदर जाने पर उसने देखा कि किटी एक जगह बैठा बर्फ़ के टुकड़े से खेल रहा था। गेर्डा उसे फौरन पहचान गई और उसके गले में हाथ डालकर बोली, "किटी ! किटी ! ! आखिर मैंने तुम्हें खोज ही लिया !"

लेकिन वह चुपचाप पत्थर बना बैठा रहा। यह देखकर गेर्डा को रोना आ गया। उसके आंसू किटी पर टपकने लगे। उसके इन आंसुओं से किटी का सारा जादू उतर गया। उसकी आंखों से, उसके दिल से जादुई आईने के टुकड़े धुल गए। अब उसने गेर्डा को पहचान लिया। दोनों एक-दूसरे से मिलकर बेहद खुश हुए।

उन्हें खुश देखकर बर्फ़ के टुकड़े भी खुशी से नाचने लगे। गेर्डा के छूने से अब किटी पर जादू का ज़रा भी असर नहीं रहा। उसे अब ठंड भी लगने लगी। दोनों ने वहां से भाग चलने का निश्चय किया। गेर्डा उसे महल के बाहर ले आई और उस झाड़ी के पास गई, जहां पिछली बार रेण्डियर ने उसे छोड़ा था।

उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह रेण्डियर वहां तैयार खड़ा था। यही नहीं, वह अपने साथ एक छोटा रेण्डियर और ले आया। दोनों एक-एक की पीठ पर सवार हो गए। थोड़ी ही देर में रेण्डियर उन्हें फिनलैंडवाली स्त्री के घर ले आए। वहां उन्होंने खाना खाया। इसके बाद वे लैपलैंडवाली स्त्री के यहां पहुंचे। उसने उन्हें नये कपड़े दिए और एक स्लेज गाड़ी दी।

लैपलैंड की सीमा के पार जहां से बर्फ़ीला प्रदेश खत्म

हो जाता था, वहां पहुंचकर उस स्त्री ने उनसे विदा ली। दोनों रेण्डियर भी उसी के साथ लौट गए। अब दोनों पैदल ही चलने लगे। कुछ दूर चलने पर अचानक एक जगह झाड़ी के पीछे से एक बहुत बढ़िया घोड़ा निकल आया। गेर्डा उसे पहचान गई। यह उन्हीं घोड़ों में से एक था, जो उसके सोने के रथ में जुते थे। इस घोड़े पर वही लुटेरों की लड़की बैठी थी। वह घर से ऊब गई थी और यात्रा पर निकली थी। वह गेर्डा से मिलकर बड़ी खुश हुई। उसने बताया कि वह राजकुमार अपनी राजकुमारी को लेकर दूर देश में चला गया और वह कौवा मर गया, जिसने गेर्डा की मदद की थी। फिर गेर्डा और किटी ने अपनी-अपनी कहानी सुनाई। वह लड़की बोली, "अच्छा, अब मैं चलूं। अगर कभी मैं तुम्हारे घर की तरफ आऊंगी, तो तुम लोगों से भी मिलूंगी।" यह कहकर वह घोड़ा दौड़ाती हुई आगे बढ़ गई।

गेर्डा और किटी आगे चले। चलते-चलते वे लोग आगे एक बड़े शहर में पहुंचे। कुछ सड़कों को पारकर आगे जाने पर फौरन उन्होंने पहचान लिया कि यह तो उनका अपना शहर है। गेर्डा अपनी दादी का मंकान पहचान गई। दोनों अन्दर चले गए। वही कमरा, वही सब कुछ। घड़ी उसी तरह टिक्-टिक् कर रही थी। किसी चीज़ में कोई फर्क नहीं आया था। फ़र्क था तो सिर्फ उन्हीं दोनों में। वे अब काफी बड़े हो गए थे। खिड़कियों में अब भी गुलाब के फूल खिले हुए थे। दोनों घर लौटकर कितने खुश थे!



# उड़ने वाला संदूक

एक महाजन था। वह बहुत धनी था। इतना धनी कि उसका घर रुपये-पैसे से भरा रहता था। उसके पास इतने रुपये थे कि अगर वह चाहता तो मीलों लम्बी सड़कों पर अपने रुपये बिछा सकता था, लेकिन उसने कभी रुपये बिछाए नहीं। उनको खूब संभालकर तिजोरी में रखता रहा। रुपये जमा करते-करते ही वह मर गया।

लेकिन उसका लड़का बिल्कुल दूसरी तरह का था। वह खूब खर्च करता था। पत्थरों की जगह सोने के सिक्कों से खेलता था। धीरे-धीरे उसने सारे पैसे गंवा दिए। उसके पास एक लम्बा सा ढीला-ढाला कुर्ता और पैरों में एक जोड़ी चप्पल के अलावा और कुछ नहीं बचा। धीरे-धीरे उसके दोस्त भी कम होने लगे। उसकी हालत बहुत खराब हो गई। अंत में उसके एक मित्र ने उसके पास एक संदूक भेजा, जिस पर लिखा था, "इसमें सामान रखकर कहीं दूसरी जगह चले जाओ।"

उस लड़के के पास संदूक में रखने लायक़ कोई सामान ही नहीं था। इसलिए वह खुद ही संदूक में बैठ



गया और ऊपर से ढक्कन बन्द कर लिया। जैसे ही उसने संदूक बन्द किया कि वह उड़कर घर से बाहर निकल आया और हवा में तैरता हुआ आसमान में पहुंच गया। लड़का उसमें बंद था। उसे बार-बार डर लग रहा था कि कहीं वह वहां से गिर पड़ा तो उसकी एक भी हड्डी नहीं बचेगी। संदूक तेज़ी से उड़ा जा रहा था और उसका दिल कांप रहा था।

उड़ते-उड़ते संदूक तुर्किस्तान जा पहुंचा। वहां वह

राजधानी के बाहर एक जंगल में उतर आया। लड़का बाहर निकल आया। संदूक को एक झाड़ी के पीछे छिपाकर वह शहर में घूमने निकला। उसे यह देखकर बड़ी खुशी हुई कि उस देश में सब लोग उसी की तरह लम्बे-लम्बे कुर्ते और चप्पल पहनते थे।

शहर में घूमते-घूमते वह एक ऐसी जगह जा पहुंचा, जहां एक मज़बूत किला बना हुआ था, जिसकी खिड़कियां काफी ऊंचाई पर थीं। उसने एक आदमी से पूछा कि यह कैसा किला है, तो उस आदमी ने बताया, "तुम्हें नहीं मालूम? यह शहजादी का महल है। शहज़ादी जब पैदा हुई थी, तो एक ज्योतिषी ने उसके बारे में बताया था कि अगर कोई आदमी इससे प्रेम करेगा, तो इस पर बड़ा संकट आएगा और इसकी ज़िंदगी बरबाद हो जाएगी। इसलिए बादशाह ने इसे किले में रखा है। वहां बादशाह और बेगम के अलावा और कोई नहीं जा सकता।"

लड़के को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह वहां से लौटकर अपने संदूक के पास आया और उसमें बैठ गया। संदूक फौरन उड़कर किले की छत पर पहुंच गया और वहां से शहज़ादी के कमरे में जा पहुंचा। उस समय शहज़ादी सो रही थी। वह इतनी सुंदर थी कि लड़का उसे देखता ही रह गया। अचानक कुछ आहट पाकर शहज़ादी की नींद खुल गई। वह लड़के को देखकर घबरा गई। लड़के ने उससे कहा, "मैं एक पैग़म्बर हूं। तुम डरो मत, मैं तुम्हें देखने के लिए आसमान से आया हूं!" यह सुनकर वह बड़ी खुश हुई। उसने आदर के साथ उसे अपने पास

बिठाया। लड़का उसका रूप देखकर मुग्ध हो गया था। वह उससे कहने लगा, "तुम मेरे जैसे आसमान के फरिश्ते से ही शादी कर सकती हो। किसी साधारण आदमी से नहीं। अगर तुम कभी साधारण आदमी से शादी करोगी, तो तुम्हें कभी सुख नहीं मिलेगा और बड़ी तकलीफ में ज़िंदगी बितानी पड़ेगी।"

भला राजकुमारी इससे ज्यादा और क्या चाह सकती थी! आसमान का फ़रिश्ता किसे मिलता है! वह फौरन राज़ी हो गई।

फिर वह कहने लगी, "तुम शनिवार को आना। उस दिन बादशाह और बेगम मुझसे मिलने आते हैं और मेरे साथ चाय पीते हैं। उस दिन कोई भी मुझसे मिलने आ सकता है। जब उन्हें मैं यह बताऊंगी कि मैं आसमान के फ़रिश्ते से शादी करने जा रही हूं, तो वे बहुत खुश होंगे। और तुम उन्हें एक अच्छी-सी कहानी सुना देना, क्योंकि वे दोनों कहानी सुनने के बड़े शौकीन हैं।"

लड़का राज़ी हो गया। शहज़ादी ने उसे सोने से मढ़ी एक तलवार दी। फिर वह अपने संदूक में बैठकर उड़ते हुए किले के बाहर आ गया। उसने तलवार बेचकर अपने लिए बहुत अच्छी पोशाक खरीदी। फिर शहर के बाहर उसी संदूक में बैठकर वह बादशाह को सुनाने के लिए कहानी रचने लगा।

अंत में शनिवार का दिन आया। उस दिन बादशाह और बेगम शहज़ादी के साथ चाय पीने आए। महाजन का लड़का भी अपनी नई पोशाक में वहां जा पहुंचा। शहज़ादी

ने पहले ही उसके बारे में बादशाह को बता दिया था। बेगम ने उससे पूछा, "तो तुम हम लोगों को कोई कहानी सुनाना चाहते हो? सुनाओ, लेकिन ज़रा अच्छी कहानी सुनाना।"

"हां भाई! अच्छी कहानी सुने बहुत दिन हो गए!" बादशाह ने कहा।

"जी हां, बड़े शौक से सुनिए!" यह कहकर लड़का उन्हें कहानी सुनाने लगा :

"एक समय की बात है। एक माचिस की डिब्बी थी, जिसकी तीलियों को इस बात पर बड़ा नाज़ था कि वे बड़े घराने की तीलियां हैं। जिस घर में यह माचिस थी, वहां के दूसरे सामान उस माचिस को बड़े घराने वाली माचिस कहा करते थे। इस माचिस की एक पतीली से बड़ी दोस्ती थी। माचिस की डिब्बी अक्सर उसे अपने किस्से सुनाया करती थी। एक दिन वह बोली, 'हमारी लकड़ी जंगल के सबसे बड़े पेड़ की लकड़ी है। वह पेड़ इतना ऊंचा था कि उस पर कोई चढ़ नहीं सकता था। जंगल की हवा हमें रोज़ जगाने आती थी और हमें खूब लोरियां सुनाती थी। हर रोज़ सुबह और शाम हम लोग हीरे की चाय पिया करते थे, जिसे तुम लोग ओस कहते हो। अच्छी-अच्छी चिड़ियां हमको मिलने आती थीं और देश-दुनियां की खबरें सुनाया करती थीं। लेकिन, हाय अब वे दिन कहां रहे! एक दिन एक दुष्ट लकड़हारा आया। उसने हमारे सपने के महल को चूर-चूर कर डाला। उस पेड़ की कोई लकड़ी कहीं गई और कोई कहीं। एक डाली एक जहाज़ का मस्तूल बनकर देश-विदेश

घूम रही है। सुना है, वह बड़े मज़े में है और हम लोगों पर दुनिया को रोशनी देने का भार आ पड़ा। हमें माचिस बनना पड़ा। इस तरह दूसरों की भलाई के लिए हम लोग रसोईघर में रहती हैं, वरना इतने ऊंचे ख़ानदान की होकर हम ऐसी गंदी जगह में रहतीं!'

"इसके बाद पतीली अपना किस्सा सुनाने लगी, 'भई अपनी तो कुछ तकदीर ही फूटी हुई है। जिस दिन से मैं इस दुनिया में आई, बस दिन-रात चूल्हे पर चढ़ना और फिर दूसरे बर्तनों के साथ रगड़-रगड़कर मंजवाते समय अपनी देह छिलवाना! सिर्फ दोपहर में ही मुझे थोड़ा-सा आराम मिलता है। मैं मंजी-धुली तुम लोगों के पास आ बैठती हूं और कुछ बातचीत करके दिल हल्का कर लेती हूं, लेकिन हम लोगों के पास बात करने को होता ही क्या है! हम लोग तो कभी रसोईघर के बाहर निकलते ही नहीं। हमारे साथियों में से सिर्फ बाल्टी आंगन तक जाती है और तरकारी की डलिया बाज़ार तक चक्कर लगा आती है। बस, इन्हीं से हमें थोड़ी-बहुत खबरें मिल पाती हैं।'

"इतने में माचिस बोली, 'आओ, कुछ खेल खेला जाए। चलो, आज यही तय किया जाए कि यहां हम रसोईघर के निवासियों में सबसे बड़ा कौन है, यानी किसका ख़ानदान सबसे ऊंचा है।'

"पतीली बोली, 'नहीं भाई, यह सब बेकार की बात है। इसके बजाय आओ हम अपनी-अपनी कहानी सुनाएं।'

"पतीली की इस बात का तश्तरियों ने ताली बजाकर समर्थन किया, 'ठीक है, ठीक है!'

"और पतीली ने शुरू से लेकर आख़िर तक अपनी कहानी सुना दी। कहानी लोगों को बड़ी पसन्द आई। पूरा रसोईघर जैसे खुशी से नाच उठा। पानी से भरी हुई बाल्टियां खुश होकर इतनी हंसीं इतनी हंसीं कि उनका पानी ज़मीन पर छलक गया। झाड़ू खुशी से नाचने लगी और तश्तरियां बार-बार ताली बजाने लगीं। चिमटा तो इतना खुश हुआ कि अपनी एक टांग पर नाचने लगा। वह बार-बार ताली बजाता जाता था। चिमटे का नाच देखकर रसोईघर के सारे निवासी हंस पड़े। एक कुर्सी की गद्दी इतनी हंसी, इतनी हंसी कि हंसते-हंसते फट गई।

"इसके बाद सबने मिलकर केतली को गाना गाने के लिए कहा, वह बोली, 'भई, मारे जुकाम के अपना तो गला खराब हो रहा है। भला गाना कैसे गाएं? कुछ उबाल आए तो गाना भी सूझे।' लेकिन असल बात तो यह थी कि वह रसोईघर के निवासियों को बहुत गंदा और असभ्य समझती थी और उनके सामने अपनी कला दिखाना बेकार मानती थी। वह तो हमेशा टेबल पर चार आदमियों के सामने ही गाती थी।

"खिड़की में एक पुरानी कलम पड़ी हुई थी, जिससे घर के नौकर-चाकर लिखा करते थे। उसका पूरा मुंह स्याही में रंगा हुआ था। लेकिन इसके लिए शर्मिन्दा होने के बजाय वह इसे अपनी एक विशेषता समझती थी और इस पर गर्व करती थी। केतली की बात सुनकर वह चिढ़ गई और बोली, 'रहने दो! अगर केतली नहीं गाना चाहती तो कोई बात नहीं। हमारी मालकिन ने रसोई के दरवाज़े पर

जो चिड़िया पाल रखी है, वह बहुत अच्छा गाती है। हम लोग उसी का गाना सुन लेंगे।'

"लेकिन चाय के प्याले को यह बात बहुत बुरी लगी, क्योंकि वह केतली का छोटा भाई था। वह बोला, 'वाह, यह भी कोई बात हुई? भला हम एक विदेशी चिड़िया का गाना क्यों सुनने लगे? मैं कहता हूं भाइयो, क्या हममें ज़रा भी देशभक्ति बाकी नहीं बची है? विदेशी चिड़िया मुर्दाबाद! मैं तरकारी की डलिया से अपील करता हूं कि हमें एक अच्छा-सा भजन सुनाए।'

"तरकारी की डलिया खखारते हुए बोली, 'मेरी समझ में नहीं आता कि क्या इसी तरह हम लोग अपना कीमती वक्त बरबाद करते रहेंगे? भाइयों, वक्त कम है, आओ, हम लोग क्यों न इस रसोईघर को ज़रा सजा-संवार दें। चलो, मैं तुम्हारा नेतृत्व करती हूं।'

"रसोईघर की सारी चीज़ों ने ताली बजाकर उसकी बात का समर्थन किया। तश्तरियां तो बड़ी देर तक ताली बजाती रहीं। तभी एक नौकरानी रसोईघर का दरवाजा खोलकर अंदर आ पहुंची। सारी चीज़ें जहां थीं, वहीं पड़ी रहीं। किसी को अपनी जगह से हटने की हिम्मत नहीं हुई। रसोईघर की हर चीज़ के मन में यही दुःख था कि मुझको अपना कमाल दिखाने का मौका नहीं मिला, वरना बहुत मुमकिन था कि मैं भी माचिस की तरह अपने को एक ऊंचे घराने का सिद्ध कर देती।

"तभी नौकरानी ने दीया जलाने के लिए माचिस जलाई। माचिस फौरन् जल उठी। वह सब लोगों को यह

दिखाना चाहती थी कि उसका कहना गलत नहीं है। वह सचमुच में सबसे ऊंचे घराने की है और दुनिया में रोशनी फैलाने का भार उसी के कंधों पर है।"

महाजन के लड़के की कहानी खत्म हो गई। बादशाह और बेगम को यह कहानी बहुत अच्छी लगी। वे दोनों बड़े खुश हुए और उसके बाद शहजादी की शादी करने के लिए राज़ी हो गए।

बड़ी धूमधाम से दोनों की शादी हुई। उस दिन पूरे शहर में रोशनी हुई। लोगों को मिठाई खिलाई गई।

लेकिन शादी के बाद महाजन के लड़के को अपना उड़ने वाला संदूक नहीं मिला। वह गायब हो चुका था। उसकी जगह एक नौलखा हार पड़ा था। यह हार लाकर उसने शहज़ादी को पहना दिया। शहज़ादी बड़ी खुश हुई। फिर दोनों साथ-साथ रहने लगे।



# सनकी बादशाह

कई साल पहले की बात है। एक बादशाह था। उसे नये कपड़े पहनने का बड़ा शौक था। वह नई-से-नई पोशाकें बनवाता था और उन पर खूब खर्च करता था। इसके अलावा उसे और किसी बात में रुचि नहीं थी। यहां तक कि उसे खेल-तमाशे देखने या शिकार खेलने जाने में भी कोई आनन्द नहीं आता था। उसे बस नई पोशाक चाहिए थी। जब वह नये कपड़े पहनता था, तो धूमधाम से उसकी सवारी निकलती थी। नये कपड़े पहनकर वह उन्हें दिखाने के लिए लोगों के सामने निकलने का कोई मौका नहीं छोड़ता था।

उस बादशाह के पास हजारों तरह की पोशाकें थीं, जिन्हें वह हर घण्टे बाद बदलता रहता था। जिस तरह जब कोई किसी बादशाह से मिलने जाता है, तो कहा जाता है कि बादशाह सलामत इस समय दरबार में बैठे हैं, उसी तरह इस बादशाह के लिए कहा जाता था कि बादशाह सलामत अपने कपड़ों के गोदाम में बैठे हैं।

एक दिन की बात है—बादशाह के दरबार में दो ठग पहुंचे। वे अपने को जुलाहे बताते थे। उन्होंने बादशाह से

कहा, "हुजूर, हम बहुत ही खूबसूरत कपड़े बुन सकते हैं। इन कपड़ों में एक गुण यह भी रहता है कि ये मूर्खों को दिखाई नहीं देते। इस तरह आसानी से पता लगाया जा सकता है कि कौन मूर्ख है और कौन नहीं।"

बादशाह ने सोचा, "वाह, ऐसे कपड़े तो बड़े काम के हैं। अगर मेरे पास ऐसे कपड़ें हों तो मैं बड़ी आसानी से इस बात का पता लगा सकता हूं कि मेरे दरबारियों और नौकर-चाकरों में कौन मूर्ख है और कौन बुद्धिमान !" उसने फ़ौरन हुक्म दिया, "मेरे लिए भी ऐसे कपड़े की पोशाक तैयार की जाए ?" और उसने खजांची को कहकर जुलाहों को बहुत-सा धन दिला दिया, ताकि वे फौरन काम में लग जाएं।

ठगों ने दो करघे लगाए और उन पर काम करना शुरू किया। हालांकि करघों में न ताना था और न बाना, फिर भी वे काम में लगे हुए थे। वे बराबर बढ़िया रेशम और खरे सोने और चांदी के तार मांगते थे और उन्हें अपने सन्दूक में रखते चले जाते थे। वे रात गए तक ख़ाली करघों पर बैठकर झूठ-मूठ कुछ न कुछ खटर-पटर किया करते थे।

कुछ दिनों के बाद बादशाह ने सोचा कि देखें जुलाहे कैसा कपंड़ा तैयार कर रहे हैं। लेकिन बार-बार यह सोचकर घबराता था कि कहीं मैं मूर्ख न सिद्ध हो जाऊं। यह सोचकर उसने पहले किसी दूसरे को भेजने का निश्चय किया। अब तक पूरे शहर में लोगों को मालूम हो गया था कि बादशाह कैसा अद्‌भुत कपड़ा बनवा रहा है। सब उत्सुकता से उसके तैयार होने की प्रतीक्षा कर रहे थे, ताकि वे जान सकें कि उसके पड़ोसियों में कौन-कौन मूर्ख हैं।

बादशाह ने अपने बूढ़े वजीर को इस काम के लिए चुना, क्योंकि वह बुद्धिमान और समझदार आदमी था।

बूढ़ा वजीर एक दिन उस मकान में गया, जहां वे ठग काम करते थे। उसने देखा कि दोनों बड़ी तेज़ी से काम में लगे हैं। लेकिन दोनों के करघे खाली पड़े हैं। उसने उनको डांटकर कहा, "क्यों, यह क्या हो रहा है? इन करघों पर तो मुझे सूत का एक तार भी नज़र नहीं आता!"

जुलाहे बोले, "हुजूर, वज़ीर साहब, ज़रा और करीब आकर देखिए। देखिए, कलाबत्तू कैसा लगा है! और उधर देखिए, ये फूल-पत्तियां कैसी कढ़ी हैं! ज़रा ग़ौर से देखिए, ऐसा खूबसूरत कपड़ा हमने आज तक तैयार नहीं किया था।"

बूढ़ा वज़ीर देखता रहा, देखता रहा। लेकिन उसे कुछ दिखाई ही नहीं दिया। उसने सोचा, "यह क्या? क्या मैं मूर्ख हूं? क्या मैं वज़ीर बनने के काबिल नहीं हूं? इसीलिए शायद कपड़ा मुझे दिखाई नहीं दे रहा है!"

तब तक एक ठग ने पूछा, "कहिए वज़ीर साहब, आप कुछ बोल क्यों नहीं रहे हैं? क्या कपड़ा आपको पसन्द नहीं आया?"

वज़ीर ने अपनी आंखों पर चश्मा चढ़ाकर और ग़ौर से देखते हुए कहा, "आ हा, हा, वाह! और कलाबत्तू का काम भई वाह! हमारे मुल्क के तो अच्छे से अच्छे कारीगर ऐसा काम नहीं कर सकते। मैं अभी जाकर बादशाह सलामत से कहता हूं कि काम बड़ी तेज़ी से और बड़ी खूबसूरती से हो रहा है!"

अपनी तारीफ़ सुनकर ठग बड़े खुश हुए। उन्होंने और बढ़-बढ़कर वज़ीर के सामने अपने कपड़े का बखान करना

शुरू किया। वज़ीर ध्यान से सब कुछ सुनता रहा और फिर उसने जाकर बादशाह को सब कह सुनाया। ठगों ने कुछ और सामान और पैसे की मांग की। फौरन ख़ज़ाने से इन्तजाम किया गया।

बादशाह ने दूसरी बार अपने एक दरबारी को भेजा। दरबारी वहां गया तो उसकी भी वही दशा हुई। लेकिन वह भी अपने को मूर्ख नहीं सिद्ध करना चाहता था। इसलिए उसने भी आकर जुलाहों और उनके कपड़े की तारीफ़ के पुल बांध दिए।

सारे शहर में यह ख़बर फैल गई कि बादशाह का अद्‌भुत कपड़ा तैयार हो रहा है। अब एक दिन बादशाह अपने वज़ीर के साथ कुछ दरबारियों को लेकर कपड़ा देखने चला। उधर जब जुलाहों को यह मालूम हुआ कि बादशाह खुद यहां तशरीफ़ ला रहे हैं, तो वे और भी तेज़ी से अपने काम में जुट गए। रास्ते-भर वज़ीर और वह दरबारी बादशाह के आगे उस कपड़े की तारीफ़ करते रहे।

जब बादशाह वहां पहुंचा तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने अपने मन में सोचा, 'यह क्या बात है? कपड़ा आख़िर मुझे क्यों नहीं दिखाई देता? क्या मैं मूर्ख हूं और बादशाह होने के काबिल नहीं!' वह फ़ौरन बोला, "भई वाह! कपड़ा तो खूब बना है! ऐसी कारीगरी का काम तो मुझे पसन्द है।"

जब बादशाह ने कपड़े की इस तरह तारीफ़ कर दी, तो भला दरबारी क्यों चूकते! उन्होंने भी कपड़े की तारीफ़ करने में एक-दूसरे को मात करना शुरू किया। देखते-देखते



दोनों ठग सारे संसार के सबसे बड़े जुलाहे और कारीगर मान लिए गए। दरबारियों की राय से बादशाह ने जुलाहों को जल्दी से जल्दी एक बढ़िया लबादा और शाही पोशाक तैयार करने का हुक्म दिया। साथ ही जुलाहों को शाही जुलाहों का खिताब मिला।

कुछ दिनों बाद बड़ी धूम-धाम के साथ बादशाह की सवारी निकलने वाली थी। उस दिन वह उसी नई पोशाक को पहनकर जनता के सामने निकलने वाला था।

जुलाहे रात-भर काम करने लगे। झूठ-मूठ हवा में कैंची चलाते थे और न मालूम क्या सिलते रहते थे। फिर बड़ी खुशी से उन्होंने शोर मचाना शुरू कर दिया, "लो, बादशाह की नई पोशाक तैयार हो गई?" उन्होंने झूठ-मूठ कपड़े पर इस्तरी की।

जुलाहे दरबार में पहुंचे और अपने हाथ उठाकर बोले, "सरकार, यह रहा आपका पाजामा और यह है आपका लबादा! इतना हलका कि जैसे मकड़ी का जाला हो। आप जब इन्हें पहन लेंगे, तो आपको लगेगा कि जैसे आपने कोई कपड़ा पहना ही नहीं है। इतने हलके हैं ये कपड़े। और हजूर, आप पर तो ये कपड़े ऐसे अच्छे लगेंगे कि देखने वाले देखते ही रह जाएंगे।"

दरबारियों ने भी हां में हां मिला दी। हालांकि जुलाहों के पास कपड़ा नाम की कोई चीज़ दिखाई ही नहीं दे रही थी। जुलाहे बोले, "सरकार, आप अपने कपड़े उतार दें और शीशे के सामने खड़े हो जाएं, ताकि हम नई पोशाक आप पर सजा दें।"

बादशाह ने सिर्फ एक लम्बा कुर्ता छोड़कर बाकी सारे कपड़े उतार दिए। ठगों ने उसे नये कपड़े पहना दिए। सब लोग वाह-वाह कर उठे। देखने में बादशाह बिल्कुल पागल-सा लग रहा था। सिर पर मुकुट पहने और घुटनों तक एक लम्बा कुर्ता गले में डाले वह शीशे के सामने अकड़कर खड़ा था। बाहर चोबदार छत्र लेकर खड़े थे।

इस तरह सज-धजकर बादशाह की सवारी निकली। बादशाह बार-बार अपने दरबारियों से कपड़े के बारे में राय

पूछता था और वे खूब तारीफ़ करते थे। बादशाह के पीछे-पीछे उसके दो खास नौकर उसका लबादा उठाकर चला करते थे। इस बार जब उन्होंने लबादा पकड़ने की कोशिश की, तो उनके हाथ में कुछ नहीं आया। लेकिन वे भी अपने को मूर्ख नहीं सिद्ध करना चाहते थे, इसलिए झूठ-मूठ ही बादशाह के पीछे-पीछे इस तरह चलने लगे, जैसे लबादा उठाए हुए हों। इस तरह ठाट-बाट के साथ बादशाह की सवारी चली जा रही थी। वह अधनंगा बादशाह बड़ी शान से एक-एक कदम आगे रख रहा था। लोगों ने रास्ते में भी बादशाह की नई पोशाक की तारीफ़ की। कोई भी यह कहकर मूर्ख बनने को तैयार नहीं था कि मुझे बादशाह के कपड़े दिखाई नहीं देते।

लेकिन एक बच्चे ने जब यह तमाशा देखा, तो उससे चुप नहीं रहा गया। वह बोला, "अरे, बादशाह तो बिल्कुल नंगा है!"

"हां, और क्या? वह तो सिर्फ कुर्ता पहने है।" दूसरे लड़के ने कहा।

धीरे-धीरे यह बात दूसरे लोग भी कहने लगे। जब बादशाह के कानों तक यह बात पहुंची, तो वह बड़े फेर में पड़ गया। अब उसे इस तरह अधनंगे चलते हुए बड़ी शर्म आ रही थी। लेकिन अब वह कर ही क्या सकता था! उसकी सवारी रुकी नहीं। उसी तरह शान से चलते हुए वह अपने महल में पहुंच गया। लोग मुंह छिपाकर हंसते रहे।

लेकिन इसके बाद उस बादशाह की नये से नये कपड़े पहनने की सनक खत्म हो गई।



# असली और नकली बुलबुल

चीन देश में एक बादशाह रहता था। उसका महल बड़ा खूबसूरत था। इतना खूबसूरत महल दुनिया-भर में कहीं नहीं था। उस महल में एक बहुत बड़ा बगीचा था, जिसमें सुन्दर-सुन्दर फूल खिले रहते थे। बगीचे में जो पेड़ थे, उनकी डालों पर चांदी की हज़ारों घंटिया बंधी थीं। जब हवा चलती थी, तो ये घंटियां इस तरह बजती थीं कि रास्ता चलनेवाला अपना काम भूलकर उनका संगीत सुनने लगते थे।

महल का यह बगीचा इतना लम्बा-चौड़ा था कि खुद बाग का माली भी उसकी पूरी देखभाल नहीं कर पाता था। उस बगीचे के दूसरे सिरे पर बड़े-बड़े पेड़ों का घना जंगल-सा था और उसके बाद समुद्र था। समुद्र के जहाज़ अक्सर आकर इन पेड़ों की डालियों को छू लेते थे।

इन्हीं पेड़ों में एक बुलबुल रहती थी। वह बड़े मीठे गाने गाती थी। उसके गाने इतने अच्छे होते थे कि जो मछुए जाल फैलाकर मछली पकड़ते थे, वे उसके गाने सुनकर मछली पकड़ना भूल जाते थे।

दुनिया के कोने-कोने से यात्री लोग राजा की राजधानी में आते थे। वे राजधानी की तारीफ करते थे। महल और बगीचा देखकर उनकी तारीफ़ करते थे। लेकिन जब वे उस बुलबुल का गाना सुनते थे, तो दुनिया की कोई चीज अच्छी नहीं लगती थी। धीरे-धीरे उस बुलबुल की कहानी दुनिया-भर में फैल गई। कवियों ने उस बुलबुल की तारीफ़ में कविता लिखना शुरू कर दिया। पढ़े-लिखे विद्वानों ने उसके बारे में किताबें लिखीं।

अन्त में एक दिन एक ऐसी किताब बादशाह के पास पहुंच गई। बादशाह ने किताब खोली। उसमें उसकी तारीफ़ लिखी थी और उसके महल और बगीचे की तारीफ लिखी थी और अंत में लिखा था कि इन सब चीज़ों से ज्यादा सुंदर है वह बुलबुल, जो समुद्र के किनारे जंगल में रहती है। जब बादशाह ने यह पढ़ा, तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ।

वह बोला, "वाह, यह कौन-सी बुलबुल है? मुझे तो इसके बारे में आज तक कुछ नहीं मालूम था!"

उसने फौरन अपने वज़ीर को बुलाया और उससे बुलबुल के बारे में पूछा, "क्या तुम इस बुलबुल के बारे में जानते हो? मेरे देश की तारीफ़ में जो किताबें लिखी गई हैं, उन सबमें इस बुलबुल को दुनिया की सबसे खूबसूरत चीज़ बताया गया है। अगर ऐसी बात है तो आज तक मुझे इस चिड़िया के बारे में क्यों नहीं बताया गया!"

वज़ीर बोला, "हुजूर, मैंने तो आज तक इस चिड़िया के

बारे में कुछ नहीं सुना। वह कभी दरबार में तो हाज़िर ही नहीं हुई।"

बादशाह ने कहा, "हम चाहते हैं कि आज शाम को उसे यहां हाज़िर किया जाए। हम उसका गाना सुनना चाहते हैं। सारी दुनिया उसके बारे में जानती है और हमको कुछ पता नहीं !"

बादशाह का हुक्म था। भला वज़ीर कैसे टाल सकता था ! उसने उसके बारे में लोगों से पूछताछ शुरू की। वह इधर दौड़ा, उधर दौड़ा। इसके पास गया, उसके पास गया। लेकिन कोई उस बुलबुल का पता नहीं दे सका। अंत में हारकर वह लौट आया और बादशाह से कहने लगा, "हुजूर, उस बुलबुल की बात एक कोरी कहानी है। किताब लिखनेवालों ने अपने मन से यह कहानी गढ़ रखी है। हुजूर, आप इन झूठी कहानियों पर यकीन न करें।"

"यह तुम क्या कहते हो? यह किताब मेरे पास जापान के बादशाह ने ख़ास तौर पर भेजी थी। भला ऐसा कैसे हो सकता है, जापान के इतने बड़े बादशाह, जो हमारे ख़ास दोस्त हैं, झूठी कहानियों पर यकीन कर लें ! नहीं, वह बुलबुल जरूर हमारे मुल्क में है। फ़ौरन उसका पता लगाया जाए। अगर शाम तक उसे हमारे सामने हाजिर नहीं किया गया तो हम सारे दरबारियों को कोड़े लगवाएंगे।"

वज़ीर ने बादशाह को सलाम किया और फिर से वह बुलबुल की खोज में निकल पड़ा। उसने दरबारियों से पूछा। दरबारियों ने जब सुना कि बादशाह ने कोड़े लगवाने की धमकी दी है तो उनके पैर कांपने लगे। वे भी वज़ीर के

साथ इधर-उधर दौड़े, इसके-उसके पास गए। लेकिन सब बेकार। कोई उन्हें बुलबुल का पता नहीं दे सका। हारकर वे एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

बहुत दौड़-धूप करने पर अन्त में उन्हें बावर्चीख़ाने में एक ग़रीब लड़की मिली। उसने बताया, "हां, हां, उस बुलबुल को मैं खूब जानती हूं! ओह ! वह कितना अच्छा गाती है! मेरी ग़रीब मां समुंदर के किनारे रहती है। मैं रोज़ उसके लिए यहां से जूठन बटोरकर ले जाती हूं। लौटते समय जब मैं जंगल में थोड़ी देर रुकती हूं तो बुलबुल का गाना खूब सुनती हूं। वह इतना अच्छा गाती है कि मेरी आंखों में आंसू आ जाते हैं।"

वज़ीर ने उससे कहा, "बादशाह सलामत उस बुलबुल का गाना सुनना चाहते हैं। हम तुम्हें इसके बदले में बावर्चीख़ाने में काम दिलवा देंगे और तुम्हें रोज़ बादशाह की जूठन मिला करेगी।"

वह लड़की उन लोगों को जंगल में ले गयी। रास्ते में एक कौवा बोलने लगा। उसे सुनकर दरबारियों ने कहा, "वाह, यह बुलबुल कितना अच्छा गाती है! अब हमें बुलबुल का पता मिल गया। हम बादशाह सलामत की सूझ की दाद देते हैं!"

असल में ये दरबारी किसी न किसी तरह बादशाह की ख़ुशामद करना चाहते थे। उन्होंने आज तक कभी बुलबुल का गाना नहीं सुना था। वह लड़की यह सुनकर हंस पड़ी और बोली, "नहीं, नहीं, यह तो कौवा है। बुलबुल की बोली अभी थोड़ी देर में सुनाई देगी।"

आगे चलने पर वे लोग उस पेड़ के नीचे पहुंचे जहां बुलबुल रहती थी। अचानक बुलबुल ने गाना शुरू किया। वज़ीर और दरबारी उसका गाना सुनकर दंग रह गए। ऐसी मीठी बोली उन्होंने आज तक नहीं सुनी थी। वह लड़की बोली, "छोटी बुलबुल, प्यारी बुलबुल! बादशाह सलामत तुम्हारा गाना सुनना चाहते हैं।"

"ठीक है, खुशी से सुनें!" बुलबुल बोली और फिर से गाने लगी।

इस बार वज़ीर बोला, "वाह, वाह! कितना अच्छा गाती हो तुम! बादशाह सलामत ने तुम्हें आज शाम को महल में बुलाया है। वहां तुम्हारा गाना होगा। तुम हमारे साथ चली चलो।"

"ठीक है, मैं चलने को तैयार हूं, लेकिन मेरा गाना जंगल के पेड़ों के बीच ज्यादा अच्छा लगता है।" बुलबुल बोली और उन लोगों के साथ चल पड़ी।

बादशाह एक बड़े भारी सजे-सजाए कमरे में हीरे-मोती से जड़े तख्त पर बैठा था, उसके सामने सोने की एक टिकटी लगी थी। जिस पर बैठकर बुलबुल गाने वाली थी। दरबार खचाखच भरा था। बुलबुल को उसकी जगह बिठाया गया। उस गरीब लड़की को भी दरवाज़े के बाहर खड़े होने की इजाज़त मिल गई।

बादशाह ने इशारा किया और बुलबुल गाने लगी। कितना अच्छा गाना सुनाया बुलबुल ने! बादशाह की आंखों में आंसू आ गए। दरबारियों का भी मन भर आया। आज तक किसी ने ऐसा गाना नहीं सुना था।



बादशाह ने खुश होकर बुलबुल को अपनी सोने की जूतियां इनाम में देनी चाहीं, लेकिन वह बोली, "नहीं सरकार, मुझे इनाम मिल गया। मेरा गाना सुनकर आपकी आंखों में आंसू आ गए, यही मेरा सबसे बड़ा इनाम है।" इसके बाद उसने एक और गाना सुनाया। इसके बाद उस बुलबुल को महल में ही रख लिया गया। उसके लिए एक सोने का पिंजरा मंगाया गया। उसको दिन में दो बार और रात में दो बार बाहर उड़ने की इजाज़त थी। बारह नौकर उसकी देखभाल के लिए तैनात किए गए।

उसके पैर में रेशम की एक डोरी बांध दी गई। जब भी वह उड़ती थी, तो डोरी का दूसरा सिरा एक नौकर के हाथ में रहता था। पूरे देश में अब उस चिड़िया की तारीफ़ होने लगी। दूर-दूर से लोग उसका गाना सुनने के लिए आने लगे।

एक दिन की बात है। बादशाह के नाम उसके किसी दोस्त ने तोहफा भेजा। वह एक डिब्बे की शक्ल में था। उस पर लिखा हुआ था, 'बुलबुल'।

जब डिब्बा खोला गया तो उसके अंदर से एक नक़ली बुलबुल निकली। देखनें में वह असली बुलबुल की तरह ही थी लेकिन उससे ज्यादा खूबसूरत थी। वह पूरी हीरे-मोती की बनी हुई थी। जब वह गाती थी तो हीरे जवाहरात की बनी हुई उसकी पूंछ बड़े मज़े में हिलती थी। यह बुलबुल चाबी भरने पर एक गाना गाती थी जो बिल्कुल असली बुलबुल की तरह होता था। बस इसी गाने को वह बार-बार दोहराती थी।

बादशाह इस खिलौने को देखकर बड़ा खुश हुआ। उसने नकली बुलबुल को भी असली बुलबुल के पास एक पिंजरे में रखवा दिया। उसने हुक्म दिया कि दोनों बुलबुलें एक साथ गाना सुनाएं। लेकिन यह बात कुछ बनी नहीं। क्योंकि नकली बुलबुल नकली ढंग से गाती थी और असली बुलबुल अपने असली ढंग से गाती थी।

इसके बाद नकली बुलबुल का गाना कई बार सुना गया। फिर बादशाह को असली बुलबुल का गाना सुनने की इच्छा हुई। लेकिन यह क्या! असली बुलबुल कहां गई! वह शायद खिड़की से उड़कर अपने जंगल में चली गई थी।

बादशाह को बड़ा बुरा लगा। उसने उस बुलबुल के आराम के लिए हर तरह का इन्तज़ाम कर रखा था। फिर भी वह इस तरह भाग गई।

लेकिन राज्य के संगीताचार्य ने बादशाह को समझाया, "हुजूर, उसका कुछ गम न करें। यह नकली बुलबुल इस समय दुनिया की सबसे खूबसूरत बुलबुल है। यह जिस धुन में गाती है और संगीत का इसे ज़ितना ज्ञान है, उतना बड़े से बड़े गवैये को भी न होगा।"

एक दरबारी बोला, "जी हां, इसके साथ इतना तो है कि हमें मालूम रहता है कि इसके बाद यह कौन-सा गाना सुनाएगी। लेकिन असली बुलबुल के बारे में यह सब कुछ नहीं कहा जा सकता। वह तो जो मन में आता है, गाती है और किसी की परवाह नहीं करती। इसके अलावा, हम इसको खोलकर देख सकते हैं और टूट-फूट होने पर इसे

सुधार सकते हैं। यह हमेशा हमारे पास रहेगी। इसके मरने का कोई सवाल ही नहीं उठता। असली बुलबुल तो एक न एक दिन मरने वाली ही है।"

दूसरे दरबारियों ने भी इन लोगों का समर्थन किया। यह तय हुआ कि अगले इतवार को इस बुलबुल का गाना आम जनता को भी सुनाया जाए। बादशाह राज़ी हो गया।

इतवार के दिन नगर के बहुत-से लोगों ने नकली बुलबुल का गाना सुना। सुनकर सब दंग रह गए। भीड़ में एक मछुआ भी था। उसने समुद्र के किनारे जंगल में असली बुलबुल का गाना सुना था। वह बोला, "हां, सुनने में इसका गाना अच्छा लगता है, करीब-करीब असली बुलबुल की तरह ही, लेकिन इसके गाने में कोई कमी मालूम पड़ती है, जो असली बुलबुल के गाने में नहीं थी।"

कुछ दिनों बाद बादशाह ने हुक्म निकालकर दरबार के अपमान के अपराध में असली बुलबुल को देश निकाला दे दिया।

अब राज्य में नकली बुलबुल का बोलबाला था। दूर-दूर से लोग उसका गाना सुनने के लिए आते थे। बादशाह के यहां उसकी बड़ी देख-रेख की जाती थी। उसको रेशम के गुदगुदे गद्दे पर रखा जाता था। रात को उसे बादशाह के पलंग के पास रख दिया जाता था। बादशाह ने नकली बुलबुल को अपने दरबार के सबसे बड़े गायक का खिताब दिया।

एक साल बीत गया। अब न सिर्फ बादशाह, बल्कि

उसके दरबारी भी नकली बुलबुल का गाना सीख गए। अब जब भी यह बुलबुल गाती थी तो इसके साथ कोई न कोई आदमी ज़रूर गाता था।

एक दिन की बात है, बादशाह अपने पलंग पर लेटा हुआ था और नकली बुलबुल का गाना सुन रहा था। इतने में अचानक कुछ खर्र-खर्र की आवाज हुई और बुलबुल का गाना बन्द हो गया। बादशाह चौंक पड़ा। उसने फ़ौरन सबसे पुराने हकीम को बुलवाया। हकीम दौड़ा-दौड़ा आया। लेकिन भला वह क्या कर सकता था!

फिर एक कारीगर को बुलाया गया, उसने चिड़िया का पुर्ज़ा-पुर्ज़ा खोला और फिर किसी तरह से उसे ठीक कर दिया। अब नकली बुलबुल बहुत थोड़ा गा सकती थी। उस कारीगर ने कहा, "सरकार, अब यह गाएगी तो, लेकिन ज़रूरत से ज्यादा नहीं गा सकेगी।"

यह सुनकर बादशाह और उसके मुसाहिबों को बड़ा अफ़सोस हुआ। अब नकली बुलबुल साल में सिर्फ एक बार गाती थी और वह भी बड़ी मुश्किल से। संगीताचार्य अब भी उसकी तारीफ़ करते थे और उनकी बात को कोई नहीं काट सकता था।

इस तरह पांच साल बीत गए। अचानक राज्य पर एक बड़ा संकट आ गया। बादशाह बीमार पड़ गया। इतना बीमार कि लोगों को अब उसके बचने की आशा न रही। उसकी जगह नया बादशाह भी चुन लिया गया।

बादशाह अपने पलंग पर पड़ा था। उसका चेहरा उतर गया था और शरीर ठंडा होने लगा था। दरबारियों ने

समझा कि बादशाह मर चुका है। वे उसे छोड़कर नये बादशाह से मिलने के लिए दौड़ पड़े।

लेकिन बादशाह अभी मरा नहीं था। वह बड़ी मुश्किल से सांस ले रहा था। ऐसा लगता था जैसे उसके सीने पर कोई बैठा है। उसने आंखें खोलकर देखा तो सचमुच मृत्यु उसके सीने पर चढ़कर बैठी थी। इस समय उसने बादशाह का ही मुकुट लगा रखा था और शाही लबादा ओढ़ रखा था। इस लबादे में से तरह-तरह के चेहरे झांक रहे थे। इनमें से कुछ सुन्दर थे और कुछ बहुत ही बदसूरत और भयावने थे। ये बादशाह के उन अच्छे और बुरे कामों के चेहरे थे, जिन्हें उसने अपने जीवन में किया था। ये भयानक चेहरे एक के बाद एक बादशाह से पूछ रहे थे, "क्या तुम्हें याद है? कहीं तुम भूल तो नहीं गए!" और फिर वे बादशाह को गालियां देने लगे और धमकाने लगे। बादशाह घबड़ाकर चीख पड़ा, "नहीं, नहीं! मैं कुछ नहीं जानता! मैं किसी को नहीं पहचानता!"

उसने अपने नौकरों को आवाज़ देकर कहा, "गाना शुरू करो! ढोल बजाओ! बड़े-बड़े ढोल और नगाड़े ताकि इनकी बातों को न सुन सकूं।" लेकिन मौत के लबादे में छिपे हुए वे डरावने चेहरे चीखते रहे और ज़ोर-ज़ोर से हंसते रहे। बादशाह ने अपने पास रखी नकली बुलबुल से कहा, "गाओ, गाओ न! मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं। मैंने तुम्हें इतना प्यार किया है। अपना गाना सुनाओ। आख़िरी वक्त कम से कम तुम्हारा एक गाना तो सुन लूं। गाओ!"

लेकिन हीरे-जवाहरात की चिड़िया चुप रही। उसमें से

एक शब्द भी नहीं निकला। कोई उसमें चाभी देने वाला ही नहीं था।

इतने में अचानक खिड़की में से मधुर संगीत के स्वर बादशाह के पास तक आने लगे। असली बुलबुल बाहर एक डाल पर बैठी गा रही थी। उसे बादशाह की बीमारी की खबर मिल गई थी। वह उसे शांति देने के लिए और हिम्मत बंधाने के लिए अपना गाना सुनाने आ पहुंची थी। जैसे-जैसे वह गाती थी, बादशह की आंखों के आगे से मृत्यु का वह भयानक रूप हटता जाता था, यहां तक कि मृत्यु खुद बुलबुल का गीत सुनने लगी और उससे बोली, "गाओ, खूब गाओ !"

बुलबुल ने मृत्यु से कहा, "मैं तुम्हें अपना गाना तो सुना सकती हूं, लेकिन इसके बदले में वादा करो कि तुम अपना लबादा और मुकुट वगैरह मुझे सौंप दोगी।"

मृत्यु ने अपना मुकुट वगैरह बुलबुल को सौंप दिया और उसका गाना सुनना शुरू कर दिया। उसका गाना सुनते-सुनते मृत्यु को अपने लोक की याद आने लगी। वह और अधिक वहां ठहर नहीं सकी, फौरन चली गई।

बादशाह बोला, "बुलबुल, मैं तुम्हें भूला नहीं हूं। आज तुमने अपना गाना सुनाकर मुझे मौत के पंजे से बचाया है। मैं तुम्हारा कितना आभारी हूं। मैंने तुम्हें अपने देश से निकाल दिया था। लेकिन तुम मुझे भूली नहीं और ऐन मौके पर आकर तुमने मेरी मदद की। बताओ, मैं तुम्हें क्या इनाम दूं?" यह कहते-कहते बादशाह की आंखों में आंसू आ गए।

बुलबुल बोली, "सरकार, मुझे अपना इनाम तो तभी मिल गया था, जब पहली बार मेरा गाना सुनकर आपकी आंखों में आंसू आ गए थे, अब मुझे और कुछ नहीं चाहिए। आप सो जाइए। मैं आपको गाना सुनाती हूं।"

वह गाना गाने लगी और बादशाह सो गया। थोड़ी देर में उसे गहरी नींद आ गई। कई दिनों से उसे ऐसी नींद नहीं आई थी। बुलबुल गाती रही।

धीरे-धीरे रात बीतने लगी। कुछ देर बाद सवेरा होने लगा। बादशाह की नींद खुली। अब वह स्वस्थ था और उसके शरीर में ताकत आ गई थी। रात-भर उसे कोई देखने नहीं आया, क्योंकि सभी लोगों ने सोचा, 'वह तो मर गया है।' सिर्फ बुलबुल ही रातभर उसके सिरहाने बैठी रही और गाती रही।

बादशाह ने उससे कहा, "मेरी अच्छी बुलबुल! अब तुम हमेशा मेरे साथ रहोगी। अब तुम्हें किसी बात के लिए तंग नहीं किया जाएगा। जब इच्छा हो गाना, और जब इच्छा न हो, न गाना। अब मैं इस नकली चिड़िया को तोड़ डालूंगा।"

"नहीं जहांपनाह, ऐसा न करें," बुलबुल ने कहा, "यह नकली चीज़ थी। जो कुछ इसके बस में था, किया। मैं महल में नहीं रह सकूंगी। जब चाहूंगी यहां आ जाया करूंगी। मैं यहीं खिड़की के पास पेड़ पर बैठकर गाया करूंगी। मेरे गाने से आपका मन प्रसन्न होगा। मैं दूर-दूर तक घूमती हूं। मछुआरों को मछली पकड़ते और किसानों को खेतों में मेहनत करते देखती हूं। मैं आपको उन सबके

बारे में बताऊंगी। लेकिन आपको एक वादा करना पड़ेगा।"

"क्या?" बादशाह ने पूछा। वह बिल्कुल ठीक हो गया था और उठकर कमरे में टहलने लगा था।

"वह यह कि आप किसी को यह न मालूम होने दें कि एक चिड़िया आप तक समाचारों को पहुंचाती है।"

बादशाह ने वादा किया और बुलबुल वहां से उड़ गई।

सवेरे जब दरबारी उसे देखने आए तो बादशाह को इस तरह टहलते हुए देखकर दंग रह गये और उससे क्षमा मांगने लगे।



# लाल जूते

एक लड़की थी, छोटी-सी लड़की, बड़ी हसीन और नाजुक, लेकिन बेचारी इतनी ग़रीब थी कि उसे पैरों में पहनने को जूते तक नहीं मिलते थे। गर्मी में वह नंगे पांव ही घूमती-फिरती थी और जाड़े में लकड़ी के बड़े-बड़े जूते पहनती थी, जिससे उसके पांव छिल जाते थे और एड़ियां लाल हो जाती थीं।

उसी गांव में एक बूढ़ी औरत रहती थी जिसका आदमी मोची का काम करता था। एक दिन बुढ़िया को उस बच्ची पर दया आ गई। उसने उसके लिए लाल कपड़े की एक जोड़ी जूतियां बना दीं। उस बच्ची का नाम था कारेन।

जिस दिन उसे यह नई जूतियां मिलीं, उसी दिन उसकी मां की मृत्यु हो गई। ऐसे मौके पर नये जूते नहीं पहनने चाहिए, लेकिन वह क्या करती! लोग जब उसकी मां को दफनाने के लिए ले चले तो वह भी उनके पीछे-पीछे चल दी। रास्ते में एक बड़ी-सी बग्घी मिली। उसमें एक मोटी-ताज़ी बुढ़िया बैठी थी। बुढ़िया ने इस बच्ची को

देखा और उसे इस पर दया आ गई। उसने लोगों से कहा, "इस बच्ची को मुझे दे दो। मैं इसे अपने पास रखूंगी और पालूंगी।"

लोगों ने उस लड़की को बुढ़िया को दे दिया। बुढ़िया कारेन को घर ले आई।

कारेन सोचने लगी कि आखिर यह बुढ़िया मुझ पर कृपा क्यों कर रही है? तभी अचानक उसके छोटे-से दिमाग में ख्याल आया कि 'हो सकता है, यह मेरी इन लाल जूतियों के कारण है। इस बूढ़ी दादी को मेरी जूतियां पसन्द आ गई।' लेकिन बात बिलकुल उलटी थी। बुढ़िया को वे जूतियां बहुत भद्दी लगीं। उसने उन्हें अंगीठी में फिंकवा दिया। फिर उसने कारेन को अच्छे-अच्छे नये कपड़े पहनाए और जूते भी पहनने को दिए। उसे पढ़ना और घर का काम-काज सिखाया जाने लगा। लोग उसे देखते और कहते, "यह बच्ची देखने में अच्छी है।" लेकिन जब वह आईने के सामने खड़ी होती तो आईना उससे कहता, "तुम देखने में अच्छी ही नहीं हो, तुम तो सचमुच बहुत सुंदर हो।"

एक दिन उस देश की रानी अपनी छोटी राजकुमारी के साथ उस शहर से गुज़री तो कुछ देर के लिए शहर के एक महल में ठहर गई। रानी का दर्शन करने के लिए महल के आगे लोग भीड़ लगाकर खड़े हो गए। कारेन भी वहीं थी। रानी के साथ-साथ नन्हीं राजकुमारी भी अपनी सुन्दर-सी सफ़ेद पोशाक पहनकर महल की खिड़की में आ खड़ी हुई। कारेन ने देखा कि राजकुमारी बड़ी सुन्दर

लाल-लाल जूतियां पहने थी। ये जूतियां कारेन की जूतियों से सचमुच ज्यादा सुन्दर थीं। उसकी नज़रें जूतियों पर ही लगी रहीं।

अब कारेन काफी बड़ी हो गई थी। उसे धर्म की दीक्षा मिलने वाली थी। इस अवसर पर उसे नई पोशाक और नये जूते मिलने वाले थे। शहर के सबसे मशहूर जूते बनानेवाले मोची ने उसके पैरों का नाप लिया। फिर वह बड़ी-सी शीशे की अलमारी के पास गई। उसमें तरह-तरह के नये जूते चमक रहे थे। उसमें लाल जूतियों का ठीक वैसा ही जोड़ा भी था जैसा कि राजकुमारी ने उस दिन पहन रखा था। बूढ़ी महिला ने कहा, "ये जूतियां कितनी सुन्दर हैं। तुम पहनोगी इन्हें?"

"हां, हां क्यों नहीं? बड़ी सुन्दर जूतियां हैं!" कारेन ने कहा, जूतियां उसके पैरों में ठीक आ गई और उनको खरीद लिया गया। लेकिन बूढ़ी महिला ने लाल जूतियां पहनकर कारेन को गिरजाघर जाने का मना कर दिया। लेकिन कारेन उन्हीं को पहनकर चली गई। उसकी सुन्दर-सुन्दर जूतियां गिरजाघर की सीढ़ियों पर संगमरमर के फर्श पर खूब चमकती थीं। कारेन को लगा कि सब लोगों की नजर उसकी जूतियों पर लगी है।

पादरी ने उसके सिर को छूकर धर्म की दीक्षा दी। फिर प्रार्थना शुरू हुई। लेकिन कारेन अपनी जूतियों के बारे में ही सोचती रही।

जब बुढ़िया को मालूम हुआ कि कारेन लाल जूतियां पहनकर गिरजाघर गई थी तो वह बहुत नाराज हुई और

बोली, "नहीं, गिरजे में काली जूतियां पहनकर ही जाना चाहिए। आगे से तुम कभी लाल जूतियां पहनकर मत जाना।"

अगले रविवार कारेन को फिर गिरजाघर जाना था। उसने कई बार सोचा, 'लाल जूतियां पहनूं या काली !' अन्त में उसका मन नहीं माना और वह लाल जूतियां पहनकर ही गिरजाघर चल दी। आज बुढ़िया भी उसके साथ थी। एक तो उसने कारेन की जूतियों की ओर ध्यान नहीं दिया और दूसरे उसकी आंखें भी खराब थीं। इसलिए उसने कारेन को मना नहीं किया। गिरजे के दरवाजे पर एक बूढ़ा सिपाही खड़ा था। वह एक पैर से लंगड़ा भी था। वह आने-जाने वालों के जूतों की धूल झाड़ देता था। इस तरह उसे दो-चार पैसे भीख में मिल जाते थे। सिपाही ने बुढ़िया की जूतियां झाड़ दीं। कारेन ने भी अपना नन्हा-सा पैर आगे बढ़ा दिया। सिपाही बड़े प्यार से उसकी जूतियां पोंछते हुए बोला, "बड़ी खूबसूरत जूतियां पहने हो तुम ! ये तो नाचने की जूतियां हैं। देखो कहीं फिसल न जाना।" बुढ़िया ने सिपाही को पैसे दे दिए। दोनों अन्दर चली गईं।

आज कारेन ने देखा कि सबकी नजर उसकी जूतियों पर लगी है। जब कारेन प्रार्थना के लिए हाथ जोड़कर और घुटने टेककर बैठी तब भी उसकी आंखों के आगे उसकी सुन्दर जूतियां नाच रही थीं। भजन गाते समय भी उसकी नजर अपनी जूतियों पर ही थी।

सब लोग गिरजे से बाहर आने लगे। वह बूढ़ी महिला भी अपनी बग्घी में आ बैठी। कारेन जैसे ही बग्घी

में पैर रख रही थी कि वह सिपाही फिर बोला, "बिटिया, तुम्हारी ये नाचने की जूतियां बड़ी खूबसूरत हैं।" यह सुनते ही कारेन का मन नाचने को हुआ। वह दो-तीन कदम नाची और फिर तो जैसे अपने-आप नाचने लगी। जैसे जूतियां खुद उसे नचा रही थीं। वह नाचती हुई काफी आगे निकल गई। सिपाही ने दौड़कर कारेन को उठा लाया और उसे बग्घी में बिठा दिया। लेकिन बग्घी में भी कारेन के पैर नाचते ही रहे। उसने बुढ़िया को भी दो-तीन ठोकरें मार दीं। अन्त में नाराज होकर बुढ़िया ने कारेन की जूतियां उतार दीं। तब जाकर उसके पैर शान्त हुए।

घर जाने पर बुढ़िया के हुक्म से कारेन की जूतियां एक अलमारी में बन्द कर दी गईं। लेकिन कारेन बार-बार जाकर उन्हें देखती थी। कुछ दिनों के बाद बुढ़िया इतनी बीमार पड़ी कि बिस्तर से उठना मुश्किल हो गया। डाक्टर का तो कहना था कि अब वह बिस्तर कभी नहीं छोड़ेगी। अब उसे हमेशा किसी की देख-रेख और सेवा की जरूरत थी। कारेन उसकी सेवा करने लगी।

लेकिन इसी बीच कारेन को एक नृत्य में भाग लेने का निमंत्रण मिला। उसने वे लाल जूतियां पहन लीं और नाच में भाग लेने के लिए चल दी। वहां पहुंचकर जब उसने नाच शुरू किया तो उसके पैर काबू से बाहर हो गए। इस तरह वह नाचते-नाचते उस कमरे से बाहर हो गई और फिर सीढ़ियां पार करके घर के बाहर सड़क पर निकल आई।

नाचते-नाचते ही वह जंगल में जा पहुंची। जंगल में वह पेड़ों के बीच नाचने लगी। अचानक उसने देखा कि



कोई चीज चमक रही है। कारेन ने गौर से देखा तो वह चांद नहीं बल्कि वही गिरजे का लाल दाढ़ी वाला सिपाही था। वह अपना सिर हिलाकर कह रहा था, "वाह, कैसी खूबसूरत जूतियां हैं।"

कारेन डर गई। उसने अपने पैरों से जूतियां निकालने की कोशिश की। लेकिन जूतियां तो जैसे उसके पैरों में चिपक गई थीं। वह बराबर नाचती रही। कारेन का बुरा

हाल था। रात में नाचना तो और भी मुश्किल है। लेकिन वह मजबूर थी। इसलिए नाचती ही रही। नाचते-नाचते वह गिरजे के पास जा पहुंची। वहां उसने देखा कि एक देवदूत खड़ा था। उसने लम्बी-सी ढीली-ढाली, खूब सफेद पोशाक पहन रखी थी। उसके बड़े-बड़े पंख जमीन को छू रहे थे। उसके हाथ में एक चमकदार तलवार थी।

उस देवदूत ने गंभीर स्वर से कहा, "नाचो, नाचो, इन लाल जूतियों को पहनकर नाचती ही रहो! तब तक, जब तक कि तुम थककर पीली न पड़ जाओ! जाओ, और नाचो!"

कारेन रोकर बोली, "मुझपर दया कीजिए, मैं बहुत थक गई हूं।" लेकिन तब तक जूतियां उसे नचाते हुए वहां से दूर ले गईं और वह उस देवदूत का जवाब सुन ही नहीं सकी। इस तरह नाचते-नाचते उसके दिन बीतने लगे। वह पहाड़ों और मैदानों में नाचती रही।

एक दिन सवेरे वह नाचते-नाचते एक ऐसे घर के पास से गुजरी, जिसे वह पहचानती थी। वह उसी बूढ़ी महिला का घर था। कारेन ने देखा कि वहां रोना-पीटना मचा हुआ है और कफन की एक पेटी पर फूल चढ़े हुए हैं। वह समझ गई कि बुढ़िया मर गई है। उसकी बड़ी इच्छा थी कि बुढ़िया को आखिरी बार देख ले, लेकिन जूतियां उसे नचाती रहीं और वह नाचते-नाचते उस जगह जा पहुंची जहां एक जादूगर रहता था। उसने जादूगर को आवाज देते हुए कहा, "बाहर निकल आओ! मैं अन्दर नहीं आ सकती, क्योंकि मैं नाच रही हूं और मुझे नाचते ही रहना है!"

जादूगर बोला, "तुम जानती नहीं हो, कि तुम कहा आ पहुंची हो। मैं बुरे लोगों का सिर काट लेता हूं?"

वह बोली, "ना, ना, मेरा सिर न काटना! बल्कि मेरे पैर काट दो, जूतियों सहित मेरे पैर काट दो।"

जादूगर ने कारेन के पैर काट दिए। जूतियों सहित उसके पैर अलग हो गए और नाचते-नाचते न मालूम कहां चले गए। फिर जादूगर ने उसके लिए दो लकड़ी के पैर बना दिए। फिर दो डालियां तोड़कर उसके लिए बैसाखियां बना दीं ताकि वह उनके सहारे चल सके। जादूगर ने उसे भिखमंगों का गाना भी सिखा दिया। कारेन ने सोचा कि अब तो मैंने अपने पाप की पूरी सजा भुगत ली। वह बैसाखी के सहारे लंगड़ाते-लंगड़ाते गिरजाघर की ओर चल पड़ी। लेकिन उसने देखा कि उसकी लाल जूतियां उसके आगे-आगे नाचती हुई चल रही थीं। वह डर गई और बीच राह से लौट आई।

इस तरह कई बार उसने गिरजाघर की ओर जाने की कोशिश की। हर बार उसे वे लाल जूतियां नाचती हुई दिखाई दीं और हर बार वह घबराकर लौट आई।

अन्त में एक पादरी को उस पर दया आ गई और उसने उसे अपने यहां रख लिया। वह पादरी की सेवा करती और रोज शाम को उसके पास बैठकर बाइबिल सुनती थी। पादरी के बच्चे उसे बहुत प्यार करते थे। रविवार को जब पादरी के घर के सब लोग गिरजाघर चले गए तो वह अपने कमरे में बैठकर रोने लगी और ईश्वर से प्रार्थना करने लगी, "हे भगवान, मुझ पर दया करो। मेरी

मदद करो।" थोड़ी ही देर में उसने देखा कि वही देवदूत उसके सामने आ खड़ा हुआ। लेकिन इस समय उसके हाथ में तलवार नहीं थी, बल्कि गुलाब की एक छड़ी थी। देवदूत ने गुलाब की छड़ी से कारेन का माथा छू दिया और दूसरे ही क्षण कारेन ने देखा कि वह दूसरे लोगों के साथ गिरजाघर में बैठी है और प्रार्थना कर रही है। उसके आसपास पादरी के नौकर-चाकर बैठे थे और उसकी प्रशंसा कर रहे थे। अब कारेन के पैर अच्छे हो गए थे। उसने उसी दिन से प्रतिज्ञा की कि अब हमेशा वह बड़े लोगों का कहना मानेगी।



# स्वर्ग का उपवन

एक समय की बात है, एक राजकुमार था। वह पढ़ने का बड़ा शौकीन था। उसके पास कई तरह की किताबें थीं, अच्छी-अच्छी सुन्दर किताबें, जिनमें तरह-तरह की जानने योग्य बातें लिखी थीं। इन किताबों को वह खूब चाव से पढ़ता और देश-दुनिया के बारे में अपना ज्ञान बढ़ाता था। वह बहुत दिनों से जानना चाहता था कि स्वर्ग का उपवन कहां है और वहां तक कैसे पहुंचा जा सकता है ! लेकिन उसकी किताब में इसके बारे में कुछ भी नहीं लिखा था।

जब वह बहुत छोटा था और पहले-पहल पढ़ने के लिए स्कूल भेजा गया था, तब उसकी दादी ने उसे स्वर्ग के उपवन की कहानी सुनाई थी। दादी ने बताया था कि स्वर्ग के उपवन में तरह-तरह के फूल लगे हैं, एक से एक बढ़कर सुन्दर और खुशबूदार। खाने में इतने मीठे हैं कि कुछ न पूछो। उनकी पंखुरियां जैसे शर्बत में डुबोई गई हैं। उनमें से एक फूल पर इतिहास लिखा है, दूसरे पर भूगोल। कोई गणित का फूल है तो कोई व्याकरण का। जो कोई इन फूलों को खा लेता है, उसे तुरंत अपना पाठ याद हो जाता

है। जितने ही फूल खाओ उतनी ही बुद्धि बढ़ती जाए। ऐसे अजीब से फूल खिलते हैं स्वर्ग के उपवन में!

तब राजकुमार बहुत छोटा था और उसने इस कहानी पर विश्वास कर लिया था। लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ और उसकी बुद्धि बढ़ने लगी, वैसे-वैसे उसने सोचना शुरू किया कि इस कहानी का कोई दूसरा मतलब है। इस तरह की कहानियों का हमेशा कोई न कोई गहरा अर्थ होता है, जैसे आदम और हौआ की कहानी। उसमें कहा गया है न, कि आदम ने वह फल खा लिया था जो नहीं खाना चाहिए था, क्योंकि वह पाप का फल था।

'अगर उस समय मैं वहां होता तो आदम को पाप का फल नहीं खाने देता। और फिर दुनिया में पाप पैदा ही नहीं होता।' राजकुमार अक्सर इस तरह सोचता था। इसलिए उसे लगा कि स्वर्ग के उपवन की कहानी का भी कोई अर्थ है। कहीं सचमुच में स्वर्ग का उपवन हो और वहां ऐसे ही फूल खिलते हों जैसे कि दादी बताया करती थी! इतिहास और भूगोल के फूल, गणित और व्याकरण के फूल, जिन्हें खा लो और पंडित हो जाओ! इसलिए बड़ा होकर भी अक्सर वह स्वर्ग के उपवन के बारे में सोचता रहता था।

एक दिन राजकुमार जंगल में घूमने गया। वह अक्सर इस तरह घूमने निकल जाया करता था। कुछ देर तक वह घूमता रहा। फिर शाम हो आई और बादल घिरने लगे। थोड़ी देर में पानी बरसने लगा। देखते-देखते पानी का जोर बढ़ गया। पानी इस तरह जमकर बरसा कि जैसे आसमान फट गया हो। अंधेरा इतना घना हो गया कि हाथ को हाथ नहीं



दिखता था। राजकुमार मुसीबत में फंस गया। अंधेरे म कभी उसका पैर फिसलता था और कभी ठोकर लगती थी। सिर छिपाने की कहीं जगह नहीं थी। चारों तरफ पानी ही पानी। पेड़ों के नीचे भी पानी से बचना मुश्किल था। पानी इस तरह मूसलाधार बरस रहा था कि राजकुमार बुरी तरह भीग गया। वह इतना थक गया कि उससे चला भी नहीं जाता था।

किसी तरह गिरते-पड़ते राजकुमार आगे बढ़ रहा था। अचानक उसे कुछ आहट-सी मिली। कुछ आगे जाने पर उसने देखा कि एक गुफा में रोशनी हो रही थी। और आगे चलकर उसने देखा कि गुफा के बीच में आग जल रही थी। आग पर एक हिरन भूना जा रहा था। आग के पास

ही एक अधेड़ स्त्री बैठी थी। देखने में वह काफी लंबी-चौड़ी और ताकतवर मालूम होती थी। वह आग में धीरे-धीरे लकड़ियां डालती जाती थी। राजकुमार को देखकर वह बोली, "आओ, अन्दर आ जाओ! आग के पास थोड़ी देर बैठकर अपने कपड़े सुखा लो।"

"बाहर बहुत पानी बरस रहा है और आंधी भी चल रही है।" राजकुमार ने आग के पास ही जमीन पर बैठते हुए कहा।

उस स्त्री ने कहा, "अभी क्या है, मेरे बेटे घर लौटेंगे, तब मौसम और ज्यादा खराब हो जाएगा। यह तूफानों की गुफा है। मेरे चार बेटे हैं। चारों चार दिशाओं में रहते हैं। समझे तुम?"

"तुम्हारे लड़के कहां गए हैं?" राजकुमार ने पूछा।

"भला यह भी कोई सवाल हुआ! मेरे लड़कों को बहुत काम करना पड़ता है। इस समय वे राजा इन्द्र के मैदान में बादलों के साथ गेंद खेल रहे हैं।" यह कहकर उस स्त्री ने आसमान की ओर संकेत किया।

"अच्छा! लेकिन तुम्हारी बोली बड़ी रूखी है। ऐसी स्त्रियों के बीच उठने-बैठने का मुझे कोई मौका नहीं मिला।"

"हां, मेरा कुछ रूखा होना जरूरी है क्योंकि मुझे अपने तूफानी लड़कों को काबू में रखना पड़ता है। ये दीवार पर टंगे हुए चार बोरे देख रहे हो? वे इन बोरों से बहुत डरते हैं। जब वे घर लौटते हैं तो मैं उन्हें इन बोरों में बंद कर देती हूं और फिर जब तक मैं नहीं चाहती तब तक वे इनमें से निकल नहीं सकते। लो एक तूफान तो लौट आया!"

यह उत्तरी तूफान था, ओले और बरफ से भरा हुआ। उसमें बहुत ही ठंड थी। उसने सील मछली के चमड़े के कपड़े पहन रखे थे और बड़ा-सा टोप भी पहन रखा था। जब वह अपने कपड़े झाड़ता था तो उसमें से बड़े-बड़े ओले टपक पड़ते थे। उसे आग के पास जाते देखकर राजकुमार बोला, "आग के बहुत पास न जाना। बाहर से आए हो, एकदम गर्मी लगेगी तो जुकाम हो जाएगा।"

उत्तरी तूफान खिलखिलाकर हंस पड़ा, बोला, "जुकाम और मुझे, लेकिन तुम कौन हो? मां, यह दुबला-पतला पिद्दी सा लड़का कौन है? क्यों जी, तुम तूफानों की गुफा में कैसे चले आए?"

वह स्त्री बोली, "यह मेरा मेहमान है। इसे तंग न करना वरना अभी तुम्हें बोरे में बन्द कर दूंगी। कायदे से बैठो। बताओ, आज तुमने क्या-क्या देखा और कहां-कहां घूमे?"

उत्तरी तूफान करीब एक महीने के बाद घर लौटा था। वह अपने किस्से सुनाने लगा, "मां, मैं उत्तरी ध्रुव से आ रहा हूं। मैं रूसी मल्लाहों के जहाज पर बैठकर भालुओं के द्वीप में गया था। उनके जहाज पर मैं अक्सर सोता रहता था। जब भी मेरी आंख खुली तो मैंने तूफानी चिड़ियों को अपने आसपास उड़ते पाया। बर्फीली आंधियों में उड़नेवाली वे चिड़ियां बड़ी अजीब होती हैं। और वह भालुओं का द्वीप भी बड़ा अजीब था। चारों तरफ बर्फ ही बर्फ। कहीं बर्फ के पहाड़ हैं तो कहीं पिघली हुई बर्फ की नदियां। जगह-जगह व्हेल मछलियों और उत्तर में पाए जानेवाले बड़े-बड़े भालुओं की ठठरियां पड़ी थीं। वहां सूरज तो

कभी उगता ही नहीं, सिर्फ थोड़ा-सा उजाला फैल जाता है। मैंने धीरे-धीरे बहकर बादलों को साफ कर दिया। एक जगह मैंने एक छोटी-सी झोंपड़ी देखी, जो मछली की खाल की बनी थी। जगह-जगह समुद्री चिड़ियों के घोंसले थे, जिनमें उनके नन्हे-मुन्ने बच्चे भूख से चहचहा रहे थे। वालरस नाम की, शेर की शक्ल की, मछलियां इधर-उधर लुढ़क रही थीं और उनके लम्बे-लम्बे दांत चमक रहे थे।

"मल्लाहों ने अपना काम शुरू किया। उन्होंने रस्सी में बंधे लम्बे-लम्बे भालों से मछली मारने की तैयारी की। एक बड़ा-सा कांटा समुद्री घोड़े की छाती में लगा और खून बर्फ पर फैल गया। मुझे यह बड़ा बुरा लगा और मैंने समुद्र में तैरनेवाले बड़े-बड़े हिमखंडों को उनके जहाज से टकराना शुरू किया। मल्लाह चीखने-चिल्लाने लगे। लेकिन मैं और भी जोर से चीखकर बहने लगा। उन्हें मजबूर होकर अपना काम बन्द करना पड़ा। आना सारा सामान वहीं फेंककर उन्हें समुद्र की ओर भागना पड़ा। अब कभी वे भालुओं के द्वीप पर नहीं जाएंगे।"

तूफान की मां बोली, "अच्छा, अच्छा, अपनी शरारतों की कहानी रहने दो। लो, पश्चिमी तूफान भी आ गया है।"

और सचमुच, एक भारी भरकम आदमी के रूप में पश्चिमी तूफान ने गुफा में प्रवेश किया। वह अमेरिका के घने जंगलों से आ रहा था और उसके हाथों में एक बड़ी भारी गदा थी। कुछ देर की बातचीत के बाद वह भी आने किस्से सुनाने लगा, "मां, इस बीच मैं बड़े घने जंगलों और दलदलों के बीच बहता रहा। वहां आदमी तो नाम लेने को

नहीं थे। मैंने गहरी-गहरी नदियां देखीं। ऊंचे-ऊंचे झरने देखे। एक बड़ा-सा भैंसा एक जगह नदी में तैर रहा था। लेकिन देखते-देखते वह बीच धार में बह गया। यह देखकर मुझे इतनी खुशी हुई कि मैंने बहुत-से पेड उखाड़ डाले इसके बाद मैं नारियल के पेडों के बीच बहता रहा। लम्बे-लम्बे मैदानों में मैंने जंगली घोड़ों से छेड़छाड़ की। फिर बड़े मजे में इधर-उधर घूमता रहा।"

तब तक दक्षिणी तूफान भी लौट आया। उसने पगड़ी बांध रखी थी। आते ही उसने उत्तरी तूफान से झगड़ा शुरू कर दिया, "जब यह आता है तो मुझे जाड़ा लगने लगता है।" उन्हें लड़ते देखकर उनकी मां ने बीच-बचाव किया और दोनों को बोरे में बन्द कर देने की धमकी दी। तब कहीं जाकर वे दोनों शान्त हुए।

फिर दक्षिणी तूफान अपने किस्से सुनाने लगा, "मां, मैं अफ्रीका से आ रहा हूं, वहां मैंने शेर का शिकार देखा। वहां की घास बहुत अच्छी होती है। वहां शुतुरमुर्ग अक्सर मुझसे दौड़ने में होड़ लिया करते थे। लेकिन भला वे मेरे मुकाबले में ठहर सकते हैं! मैं रेगिस्तानों में बहता रहा। एक बार मैंने ऐसा कारवां देखा जो रेगिस्तान में रास्ता भूल गया था। लोग पानी के बिना तड़प रहे थे। उन्होंने एक-एक करके अपने सारे ऊंटों को इसलिए मार डाला था कि उनके पेट से दो चुल्लू पानी मिल जाए। मुझे भी खिलवाड़ करने की सूझी। मैंने बालू का अंधड़ उठा दिया। उस समय उन लोगों के चेहरे देखने के काबिल थे। मुझे बड़ा मजा आया। मैंने उन पर इतनी बालू बरसाई कि वे सब

उसी में दब गए। और उनके ऊपर बालू का एक पिरामिड खड़ा हो गया। अब अगर मैं वहां की सारी बालू उड़ा दूं तो उन लोगों की ठठरियां दिखाई देंगी।"

"तुमने यह बड़ा बुरा काम किया। तुम ऐसे ही बुरे काम करते रहते हो। चलो, इधर आओ!" तूफानों की मां नाराज होकर बोली। उसने दक्षिणी तूफान को एक बोरे में ठूंस दिया। वह इधर-उधर लुढ़कने लगा, तो वह उसी पर चढ़कर बैठ गई।

राजकुमार बोला, "तुम्हारे ये लड़के बड़े ऊधमी है!"

"हां, लेकिन मैं जानती हूं कि इनकी अक्ल किस तरह दुरुस्त की जा सकती है। लो, वह चौथा लड़का भी आ गया।"

इतने में पूर्वी तूफान आ पहुंचा। उसने चीनियों जैसे कपड़े पहन रखे थे। उसे देखकर मां बोली, "ओह, तो तुम चीन देश गए थे। मैंने तो सोचा था, तुम स्वर्ग के उपवन में गए हो।"

"हां मां, वहां मैं कल जाऊंगा। करीब सौ साल से वहां जा नहीं पाया हूं। अभी तो मैं चीन से आ रहा हूं। वहां मैंने ऊंची-ऊंची लकड़ी और बांस की मीनारों की घटियां बजाई। वहां सड़कों पर लोग धर्म के नाम पर और पुण्य कमाने के उद्देश्य से मार खा रहे थे। उनके धार्मिक गुरु पीट-पीटकर उनकी पीठों पर बांस की खपच्चियां तोड़ रहे थे। यह देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई और मैंने एक विशाल घण्टे को घनघनाकर बजाया।"

मां बोली, "तुम भी बहुत शरारती हो गए हो। अब

कल तुम जरूर स्वर्ग के उपवन में जाना। देखो, वहां बुद्धि के झरने से खूब पेट भरकर पानी पीना न भूलना। मेरे लिए भी उस झरने का थोड़ा-सा पानी ले आना।"

पूर्वी तूफान बोला, "ठीक है मां! लेकिन यह तो बताओ कि तुमने दक्षिणी भैया को बोरे में क्यों बन्द कर रखा है! जरा मैं उससे फिनिक्स नाम की चिड़िया के बारे में पूछना चाहता हूं, क्योंकि जब भी मैं सौ साल बाद राजकुमारी से मिलता हूं, तो वह मुझसे चिड़िया के बारे में पूछती है। मां, बोरा खोल दो, मैं तुम्हें दो प्याला चाय दूंगा—बिल्कुल ताजी, चीन की चाय!"

चाय का नाम सुनकर बुढ़िया खुश हो गई। उसने बोरा खोल दिया। दक्षिणी तूफान शर्म से गर्दन नीची किए बोरे में से निकल आया। वह बोला, "लो यह ताड़ की पत्ती लो। यह उस चिड़िया ने मुझे राजकुमारी के लिए दी थी। इस पर उसने पूरे सौ साल का इतिहास लिखा है। उसमें लिखा है कि किस तरह उसने खुद अपने घोंसले में आग लगाई और एक हिन्दू सती की तरह वह उसी में जल मरी। लेकिन उसका अण्डा नहीं जला। अण्डा फूटा और उसमें से फिनिक्स का बच्चा निकलकर उड़ गया। बस दुनिया में उस जाति की चिड़िया का यही एक नमूना बचा है। उसने इस पत्ती में एक छेद कर दिया है और इस तरह राजकुमारी को अपना संदेश भेजा है।"

अब पूर्वी तूफान राजकुमार के पास आ बैठा। तूफानों की मां ने सबके लिए खाना परोस दिया। राजकुमार ने पूर्वी तूफान से पूछा, "वह कौन-सी राजकुमारी है, जिसके

बारे में तुम लोग बातें कर रहे हो? और यह स्वर्ग का उपवन कहां है?"

पूर्वी तूफान खिलखिलाकर हंस पड़ा, "क्यों? क्या तुम वहां जाना चाहते हो? अच्छी बात है, कल तुम मेरे साथ वहां चले चलना। लेकिन मैं पहले बता दूं कि आज तक वहां कोई मनुष्य नहीं गया है। तुमने शायद बाइबिल में इसके बारे में पढ़ा है, जिसमें लिखा है कि सिर्फ आदम और हौआ ही वहां गए थे और जब उन्हें वहां से निकाल दिया गया तो वह उपवन पाताललोक में चला गया। लेकिन अब भी वह उतना ही सुन्दर है। वहां परियों की रानी रहती है। अच्छा, अब मुझे नींद आ रही है। रात भी काफी हो गई है। अब सो जाएं। कल सवेरे मैं तुम्हें वहां ले चलूंगा।"

सब लोग सो गए। सवेरे जब राजकुमार की आंख खुली तो उसने देखा कि वह बादलों के ऊपर उड़ा चला जा रहा था। पूर्वी तूफान उसे अपनी पीठ पर उठाए हुए उड़ा जा रहा था। वहां से धरती की सब चीजें बहुत छोटी दिखाई दे रही थीं। शाम होते-होते सभी चीजें अंधेरे में डूबने लगीं। नीचे जो शहर पड़ते थे उनके दीये तारों की तरह टिमटिमा रहे थे।

पूर्वी तूफान ने राजकुमार से कहा, "लो, अब हम लोग हिमालय पर्वत के ऊपर से उड़ रहे हैं। यह संसार का सबसे ऊंचा पहाड़ है। अब थोड़ी ही देर में हम स्वर्ग के उपवन में पहुंच जाएंगे।"

और सचमुच कुछ दूर आगे जाने पर हवा में तरह-तरह के फूलों की खुशबू आने लगी। कभी-कभी पके हुए सेब,

नाशपाती, अंगूर और अंजीरों की खुशबू भी आती थी।

इसके बाद वे लोग गुफा से होकर गुजरे। यहां बहुत ठण्डक थी। कभी-कभी गुफा इतनी संकरी हो जाती थी कि उन्हें अपने घुटनों के बल रेंगकर उसे पार करना पड़ा था। राजकुमार ने कहा, "स्वर्ग के उपवन में जाने से पहले शायद हम मौत की घाटी से होकर गुजर रहे हैं।"

पूर्वी तूफान ने हामी भरी और सामने की ओर इशारा किया, जहां से गुफा में से नीला प्रकाश आ रहा था। आगे बढ़ते-बढ़ते चट्टानें कुहरे की शक्ल में बदलने लगीं। हवा बहुत ही ताजी थी और ताजे गुलाब की खुशबू से भरी हुई थी। अब वे गुफा के बाहर हो गए थे। उन्हें एक नदी मिली, जिसमें बहुत ही साफ पानी बह रहा था। उसमें तरह-तरह की सुनहरी और सफेद मछलियां तैर रही थीं। नदी पर संगमरमर का एक बहुत ही सुन्दर पुल बना हुआ था। पुल क्या था, जैसे कसीदा काढ़ा गया हो। इस पुल के पार सौभाग्य का द्वीप पड़ता था। वही स्वर्ग का उपवन था।

पूर्वी तूफान राजकुमार को पुल के पार ले गया। वहां उपवन के फूल और पेड़-पौधे उन मीठी लोरियों की तरह सुन्दर गीत गा रहे थे, जिन्हें राजकुमार ने बचपन में सुना था। वहां पेड़-पौधे अजीब-से थे। देखने में इतने धुंधले जैसे कोहरे या पानी के नीचे छिपे हों। उन्हें ठीक से पहचान पाना मुश्किल था। अजीब-सा उपवन था यह। यहां के फूल-पौधे, पेड़-पत्ती, यहां तक कि चिड़ियों में भी फर्क करना मुश्किल था। घास के कालीनों पर मोरों के झुण्ड अपनी बहुरंगी पूंछें फैलाए नाच रहे थे। जब

राजकुमार ने उन्हें छूकर देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये मोर नहीं थे, पौधे थे। बड़े-बड़े शेर और चीते, जो शायद पालतू थे, बिल्लियों की तरह इधर-उधर खेल रहे थे। इन्हीं के बीच हिरन भी निडर होकर घूम रहे थे। और फिर अन्त में परियों की राजकुमारी मिली। उसके कपड़े जाड़े की सुहानी धूप की तरह चमक रहे थे और उसका चेहरा प्रसन्नता से खिला हुआ था। उसके पीछे-पीछे उसकी सुन्दर सखियां चल रही थीं, जिनके बालों में एक-एक सितारा चमक रहा था।

पूर्वी तूफान ने झुककर राजकुमारी को प्रणाम किया और फिर उसके हाथ में फिनिक्स की दी हुई ताड़ की पत्ती दे दी। राजकुमारी की आंखें खुशी से चमक उठीं। इसके बाद परी राजकुमार को अपने महल में ले गई, जिसकी दीवारें धूप से खिले हुए कमल की तरह थीं और जिसकी छत पर एक उल्टे फूल की तरह थी। राजकुमार ने एक खिड़की से झांककर बाहर देखा। वहां उसे पाप और पुण्य के ज्ञान का वह वृक्ष दिखाई दिया, जिसका फल आदम और हौआ ने खाया था। आदम और हौआ भी वहीं खड़े थे। परी ने राजकुमार को बताया कि असल में यह एक चित्र है। समय ने ये चित्र खिड़की के शीशे पर बना दिए हैं। लेकिन ये जिन्दे चित्र हैं, जिनमें पेड़ों की पत्तियां हिलती हैं और जीव-जन्तु उसी तरह आते-जाते दिखाई देते हैं, जिस तरह किसी आईने में दिखाई देते हैं। राजकुमार ने इसी तरह के चित्र दूसरी खिड़कियों के शीशों पर भी बने हुए देखे जिन पर बाइबिल की कहानियां जीवित रूप में अंकित

थीं। केवल समय ही ऐसे चित्र बना सकता था।

परी ने राजकुमार से कहा—"आओ, तुम्हें नाव में घुमाऊं। यह नौका-विहार तुम पसन्द करोगे। यह नाव ऊंची-नीची लहरों पर थपेड़े खाती हुई इस तरह तैरती है कि अपनी जगह ही खड़ी लगती है और सारे संसार के सारे देश अपने पुराने इतिहास के साथ इसके पास से गुजरते जाते हैं।"

सचमुच यह बड़ा विचित्र दृश्य था। नाव के पास से कभी आल्पस पर्वत की बर्फीली चोटियां गुजरती थीं तो कभी अफ्रीका के घने जंगल, कभी तुरही बजाते हुए गड़रियों के झुण्ड दिखाई देते थे, तो कभी मिस्र के ऊंचे-ऊंचे पिरामिड। कहीं जंगली लोग नाच रहे थे तो कहीं साधु भजन गा रहे थे। थोड़ी देर में परी ने राजकुमार को सारे संसार की सैर करा दी।

"क्या मैं यहां हमेशा के लिए रह सकता हूं?" राजकुमार ने पूछा।

"यह तो तुम्हारे मन पर निर्भर है। जिन बातों से तुम्हें मना कर दिया जाए उन्हें अगर तुम कभी न करो तो यहां हमेशा रह सकते हो।"

राजकुमार बोला, "मैं आदम की तरह यहां पाप और पुण्य के वृक्ष के फल नहीं खाऊंगा। दूसरे भी तो बहुत-से पेड़ हैं।"

"सोच लो, अगर तुम्हें अपने पर भरोसा न हो तो पूर्वी तूफान के साथ लौट जाओ। वह फिर सौ साल बाद ही यहां आएगा। लेकिन हमारे लिए यह सिर्फ सौ घण्टे का

समय होता है। हर शाम को मैं तुमसे अलग होते समय कहूंगी—'आओ मेरे साथ चलो !' मैं तुम्हें बुलाने के लिए इशारे करूंगी, लेकिन याद रखो, तुम आना मत, क्योंकि जैसे ही तुम मेरे पास आओगे यह उपवन पाताल में चला जाएगा। तुम्हारे आसपास रेगिस्तानी आंधियां चलने लगेंगी। तुम बर्फीले पानी में भीगोगे और हमेशा के लिए दुःख और चिन्ता तुम्हारे भाग्य में लिख दी जाएगी !"

"मैं तो यही रहूंगा और हर तरह के लालच से बचने की कोशिश करूंगा।" राजकुमार दृढ़ निश्चय के साथ बोला।

पूर्वी तूफान ने उसका सिर चूमकर उससे विदा लेते हुए कहा, "अच्छा, मैं चलूं। सौ साल के बाद अब तुमसे मुलाकात होगी। तुम यहां आराम से रहना।" यह कहकर उसने अपने बड़े-बड़े चमकीले पंख फैला दिए। फूल-पत्तियों ने भी 'विदा ! अलविदा !' कहकर उसे विदा दी। कई तरह की चिड़ियां स्वर्ग के उपवन की आखिरी सीमा तक उसके साथ उड़कर गईं।

परी ने राजकुमार से कहा, "अच्छा, चलो ! अब हम अपना नृत्य शुरू करें। हर रोज जब शाम होने लगेगी तो मैं तुम्हें अपने साथ चलने के लिए कहूंगी, लेकिन तुम मत आना। सौ साल तक हर रोज शाम को मैं इसी तरह तुम्हें बुलाऊंगी। तुम हर रोज अपने को काबू में रखने की कोशिश करना। धीरे-धीरे तुम्हारा धीरज इतना बढ़ जाएगा की तुम फिर कभी मेरे साथ आने को तैयार नहीं होओगे। तो, आज की शाम पहली शाम है।"

फिर परी ने उसके साथ नाचना शुरू किया। दोनों

खूब देर तक नाचते रहे। उनके साथ-साथ वहां के सारे फूल-पौधे भी नाचते रहे। जब शाम होने लगी तो कमरे की एक दीवार गायब हो गई। और राजकुमार को पाप और पुण्य के ज्ञान का वह अनोखा वृक्ष दिखाई देने लगा। उसने सुना जैसे कोई उसकी मां की आवाज में बुला रहा हो, "आओ, राजकुमार, चलो मेरे साथ! आओ, चलो!" और राजकुमार अपना वादा भूलकर फौरन उसकी ओर दौड़ा चला गया· हालांकि यह उसकी पहली ही शाम थी।

फलों की खुशबू और भी घनी हो गई। नृत्य का संगीत और भी मधुर हो गया। जिस कमरे में पाप और पुण्य के ज्ञान का वृक्ष खड़ा था वहीं से परी उसे बुला रही थी, "आओ, चले आओ!" और दूसरे ही क्षण वह उस पेड़ की डालियों के पीछे छिप गई।

राजकुमार ने आगे बढ़कर पेड़ की डालियों को हटा दिया। वहां राजकुमारी सो रही थी। परियों की राजकुमारी इस समय इतनी सुन्दर लग रही थी, जैसे सुन्दरता की देवी हो। राजकुमार ने आगे बढ़कर उसे छू लिया। लेकिन जैसे ही उसने उसे छुआ कि बहुत जोरों से बिजली कड़की। स्वर्ग का उपवन कांप उठा। देखते-देखते परी गायब हो गई। और स्वर्ग का उपवन पाताल में धंसने लगा। धीरे-धीरे उपवन राजकुमार से दूर हो गया। अब वह आसमान में एक तारे की तरह चमक रहा था। राजकुमार के चारों तरफ घोर अंधेरा छाया हुआ था। वह घबराकर बेहोश हो गया।

कुछ देर बाद वहां बहुत ही ठण्डे पानी की बरसात शुरू हो गई। तेज हवा बहने लगी। काफी देर बाद राजकुमार को

होश आया। वह बड़बड़ाने लगा, "हाय, यह मैंने क्या कर डाला! मैंने भी आदम की तरह पाप किया और स्वर्ग का उपवन पाताल में धंस गया।" उसने आंखें खोलीं तो देखा, दूर आसमान में सुबह का तारा चमक रहा था, ठीक वैसे ही जैसे स्वर्ग का उपवन उससे दूर होते हुए चमका था।

राजकुमार ने इधर-उधर आंखें घुमाकर देखा तो अपने को तूफानों की गुफा में पाया। तूफानों की बुढ़िया मां उसके पास ही बैठी थी, वह बोली, "अगर तुम अच्छे काम करोगे और अच्छे लड़के बनोगे तो मरने के बाद उसी तारे में तुम्हें जगह मिलेगी जहां स्वर्ग का उपवन है! अब तो तुमने देख लिया न स्वर्ग का उपवन!"

इसके बाद राजकुमार घर लौट आया और एक अच्छा लड़का बनने की कोशिश करने लगा।

• • •

मुद्रक : लक्ष्मी प्रिन्टइंडिया, शाहदरा, दिल्ली-32

# किशोरों के लिए उपन्यास

गुलिवर की यात्राएं (Gulliver's Travels) (पुरस्कृत)
रॉबिन्सन क्रूसो (Robinson Crusoe) (पुरस्कृत)
ख़ज़ाने की खोज में (Treasure Island) (पुरस्कृत)
चांदी का बटन (Kidnapped)
कठपुतला (Pinnochio) (पुरस्कृत)
वीर सिपाही (Ivanhoe)
चमत्कारी तावीज़ (Talisman)
तीसमार ख़ां (Don Quixote)
तीन तिलंगे (Three Musketeers)
क़ैदी की करामात (Count of Monte Christo)
डेविड कॉपरफील्ड (David Copperfield)
बर्फ़ की रानी (Anderson's Fairy Tales)
रॉबिनहुड (Robinhood)
जादू का दीपक (Stories from Arabian Nights)
अस्सी दिन में दुनिया की सैर (Around the World in 80 Days)
जादूनगरी (Alice in Wonderland)
मूंगे का द्वीप (Coral Island)
बहादुर टॉम (Tom Sawyer)
परियों की कहानियां (Grimm's Fairy Tales)
सिंदबाद की सात यात्राएं (The Seven Voyages of Sindbad)
ईसप की कहानियां (Aesop's Fables)
मोबी डिक (Moby Dick)
जंगल की कहानी (Call of the Wild)
काला घोड़ा (Black Beauty)
अद्‌भुत द्वीप (Swiss Family Robinson)
काला फूल (Black Tulip)
समुद्री दुनिया की रोमांचकारी यात्राएं (20,000 Leagues Under the Sea)

ISBN 81-7483-018-9
9 788174 830180

शिक्षा भारती